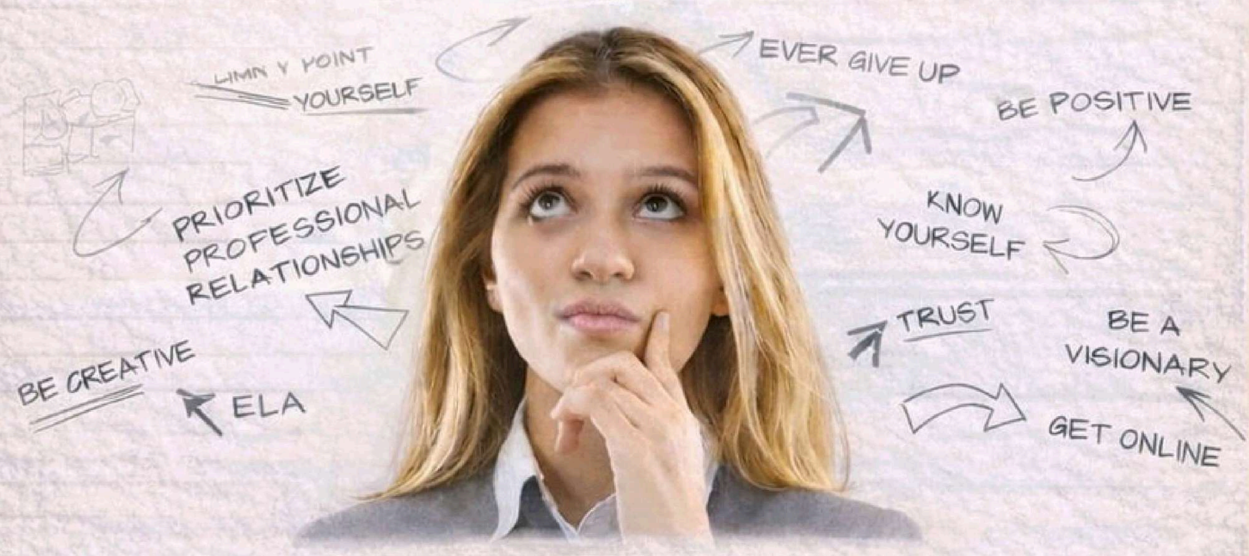
ISBN: 978-93-344-2335-8

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन





डॉ. उमेश सिंह | आयुष गुप्ता

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. उमेश सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई

आयुष गुप्ता
बी.एल.एड., एम.एड., एम.ए.

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. उमेश सिंह

आयुष गुप्ता

© सर्वाधिकार सुरक्षित

E-book संस्करण: मार्च, 2026

मूल्य: ₹99

ISBN: 978-93-344-2335-8

प्रकाशक :-

आयुष गुप्ता

301, डाकघर के पास,

मुस्करा, हमीरपुर,

उत्तर प्रदेश – 210506

मोबाइल: 9648610440

EMAIL : ayushorai9@gmail.com

प्राक्कथन

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का प्रमुख साधन है । शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति के बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक तथा व्यावसायिक विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना ही नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को जीवनोपयोगी कौशलों से युक्त करना तथा उनके भविष्य के लिए उचित व्यावसायिक दिशा प्रदान करना भी है ।

वर्तमान युग तीव्र प्रतिस्पर्धा का युग है, जिसमें विद्यार्थियों के समक्ष विभिन्न प्रकार के व्यवसायों के अनेक विकल्प उपलब्ध हैं। ऐसे में विद्यार्थियों के मन में अपने भविष्य के व्यवसाय के चयन को लेकर अनेक प्रकार के विचार, असमंजस तथा द्वन्द उत्पन्न हो जाते हैं। इस प्रकार की मानसिक स्थिति को व्यावसायिक द्वन्द कहा जाता है । विशेष रूप से माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी जीवन के ऐसे महत्वपूर्ण चरण में होते हैं, जहाँ उन्हें अपने भविष्य के संबंध में महत्वपूर्ण निर्णय लेने होते हैं ।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समक्ष अनेक सामाजिक, पारिवारिक तथा व्यक्तिगत अपेक्षाएँ होती हैं, जिनके कारण उनके मन में विभिन्न व्यवसायों के चयन को लेकर द्वन्द की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। यह द्वन्द उनके व्यक्तित्व विकास तथा भविष्य के व्यवसाय चयन को प्रभावित कर सकता है । अतः विद्यार्थियों में व्यावसायिक द्वन्द का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है, जिससे उन्हें उचित शैक्षिक एवं व्यावसायिक मार्गदर्शन प्रदान किया जा सके । प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन" इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु किया गया है। इस अध्ययन के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द की स्थिति में किस प्रकार का अंतर पाया जाता है ।

इसको पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है –

प्रथम अध्याय - प्रस्तावना

इस अध्याय में अध्ययन की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि का वर्णन किया गया है, जिसमें प्रस्तावना, अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व, समस्या का कथन, अध्ययन के उद्देश्य, परिकल्पनाएँ तथा प्रमुख पदों की परिभाषाएँ प्रस्तुत की गई हैं ।

द्वितीय अध्याय – संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

इस अध्याय में अध्ययन से संबंधित पूर्व में किए गए शोध कार्यों एवं साहित्य का संक्षिप्त एवं व्यवस्थित वर्णन किया गया है, जिससे अध्ययन की पृष्ठभूमि स्पष्ट होती है।

तृतीय अध्याय – अनुसंधान विधि

इस अध्याय में अनुसंधान की विधि, अध्ययन की जनसंख्या, न्यादर्श (Sample), अनुसंधान के उपकरण, आँकड़ों के संकलन की प्रक्रिया तथा आँकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियों का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय – आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

इस अध्याय में संकलित आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है तथा परिणामों की व्याख्या प्रस्तुत करते हुए परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है।

पंचम अध्याय – निष्कर्ष एवं सुझाव

इस अध्याय में अध्ययन से प्राप्त प्रमुख निष्कर्षों का वर्णन किया गया है। साथ ही अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ तथा भावी अनुसंधान के लिए उपयोगी सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबंध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसंधानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है जब तक कि वह जनसामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक विद्यालय से सम्बन्धित विभिन्न घटकों में प्रेरणा का संचार करने में निश्चय ही सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियों का होना स्वाभाविक है। अत: यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

दिनांक : 10/03/2026 — डॉ. उमेश सिंह

स्थान : उरई (जालौन) — आयुष गुप्ता

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय

अध्ययन की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि

1.1 प्रस्तावना

1.2 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

1.3 समस्या कथन

1.4 अध्ययन के उद्देश्य

1.5 अध्ययन की परिकल्पना

1.6 समस्या में प्रयुक्त पदों का परिभाषीकरण

1.7 शोध समस्या का परिसीमांकन

अध्ययन की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि

1.1 प्रस्तावना :

हिन्दी का शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा के 'शिक्ष्' धातु से लिया गया है जिसका अर्थ होता है– 'सीखना' या सिखाना। व्यक्ति जीवन–पर्यन्त कुछ–ना–कुछ सीखता रहता है। जन्म के बाद से ही बालक सर्वप्रथम अपने माता–पिता तथा परिवारजनों से आदर्शों, मूल्यों व संस्कृति आदि की शिक्षा प्राप्त करता है। इसके पश्चात् व पास–पड़ोस व विद्यालय से सामाजिक तथा औपचारिक शिक्षा ग्रहण करता है। यह प्रक्रिया आजीवन चलती रहती है। व्यक्ति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र व जीवन में आने वाले प्रत्येक अनुभव से कुछ–ना–कुछ सीखता रहता है।

शिक्षा का अंग्रेजी रूपान्तरण 'Education' है जो Latin भाषा के 'Educatum' से लिया गया है जिसका अर्थ है– 'अंदर से बाहर की ओर विकसित करना।' अर्थात् बालक की अन्तर्निहित शक्तियों को बाहर की ओर प्रकट करना एवं उनका विकास करना ही शिक्षा है।

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है, इसके द्वारा मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों तथा जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान और कला कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है और यह कार्य मनुष्य के जन्म से ही प्रारम्भ हो जाता है। बच्चे के जन्म के कुछ दिन बाद ही उसके माता–पिता एवं परिवार के

अन्य सदस्य उसे सुनना और बोलना सिखाने लगते हैं। जब बच्चा कुछ बड़ा हो जाता है तब उसे सामाजिक आचरण की विधियाँ सिखायी जाती हैं जब वह तीन–चार वर्ष का हो जाता है तो उसे पढ़ना–लिखना सिखाने लगते हैं। इसी आयु पर उसे विद्यालय भेजना प्रारम्भ किया जाता है। विद्यालय में उसकी शिक्षा सुनियोजित ढ़ंग से चलती है। विद्यालय के साथ–साथ उसे परिवार एवं समुदाय में भी कुछ न कुछ सिखाया जाता है और सीखने–सिखाने का यह क्रम विद्यालय छोड़ने के बाद भी जीवन भर चलता रहता है। इस सम्बन्ध में पेस्टालॉजी का कथन है ''शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, समरूप तथा प्रगतिशील विकास है।''

शिक्षा विकास की एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है अर्थात् व्यक्ति अपने जन्म से मृत्यु तक जो कुछ सीखता है और अनुभव करता है, वह सब शिक्षा के अन्तर्गत आता है। उसके सीखने और अनुभव करने का परिणाम यह होता है कि वह धीरे–धीरे विभिन्न प्रकार से अपने भौतिक और आध्यात्मिक वातावरण से अपना सामंजस्य स्थापित करता है। शिक्षा मानव जीवन की प्रगति से जोड़ने की मुख्य धारा है। शिक्षा और विकास के सम्बन्ध में **डॉ0 ए0स0 अल्तेकर** का मत है कि ''शिक्षा को प्रकाश व शक्ति का ऐसा स्रोत माना जाता था, जो हमारी शारीरिक, मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक शक्तियों तथा क्षमताओं का निरन्तर एवं सामंजस्यपूर्ण विकास करके हमारे स्वभाव को परिवर्तित करती है और उसे उत्कृष्ट बनाती है।''

समाजशास्त्र में शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली वह साउद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला–कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। जिसके द्वारा व्यक्ति एवं समाज दोनों निरन्तर विकास करते हैं।

जॉन लॉक महोदय का कथन है– ''जिस प्रकार पौधे का निर्माण कृषि द्वारा हाता है उसी प्रकार बालक का निर्माण शिक्षा द्वारा होता है।''

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी का विकास होता है। विद्वानों के अनुसार शिक्षा मनुष्य को वह सब प्राप्त करने में सहायता करती है जिसके कि वह योग्य होता है और जिसकी वह आकांक्षा करता है। यह मनुष्य के भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों से सम्बन्धित होती है। यह उसे भूत से परिचित कराती है, वर्तमान में जीने योग्य बनाती है और भविष्य का निर्माण करने की क्षमता प्रदान करती है। दार्शनिकों की दृष्टि से यह मनुष्य को अपने जीवन के उद्देश्यों को प्राप्त करने योग्य बनाती है।

समाजशास्त्रियों की दृष्टि से यह मनुष्य का समाजीकरण करती है। सामाजिक नियन्त्रण रखती है और सामाजिक परिवर्तन करती है। राजनीति शास्त्रियों की दृष्टि से यह मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास मार्गान्तीकरण और उदान्तीकरण करती है और वैज्ञानिकों की दृष्टि से यह मनुष्य की अन्तःशक्तियों का वाह्य जीवन से सामंजस्य स्थापित करती है।

अर्थशास्त्रियों की दृष्टि से यह मनुष्य में व्यावसायिक कुशलता का विकास करती है और राष्ट्र का आर्थिक विकास करती है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार– ''मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।''

महत्मा गाँधी के अनुसार– ''शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक व मनुष्य के शरीर, मन व आत्मा के सर्वांगीण विकास से है।''

शिक्षा के प्रकार–

(अ) 1. अनौपचारिक शिक्षा

2. औपचारिक शिक्षा

3. निरौपचारिक शिक्षा

अनौपचारिक शिक्षा में कोई समय व स्थान निश्चित नहीं होता है। व्यक्ति कभी भी, कहीं भी, किसी से भी सीख सकता है। यह शिक्षा जीवन भर निरन्तर चलती रहती है।

औपचारिक शिक्षा से तात्पर्य उस शिक्षा से है जिसमें शिक्षक एक निश्चित समय व स्थान पर निर्धारित पाठ्यक्रम शिक्षार्थी को पढ़ाता है। जैसे– विद्यालयी शिक्षा।

निरौपचारिक शिक्षा ना तो औपचारिक शिक्षा की तरह विद्यालयों में निश्चित समय व स्थान पर दी जाती है और न ही अनौपचारिक शिक्षा की तरह जीवन–पर्यन्त चलती रहती है। इसके उद्देश्य तो निश्चित होते हैं परन्तु यह शिक्षा प्रणाली लचीली होती है। जैसे– खुले विश्वविद्यालय।

(ब) 1. उदारवादी शिक्षा

2. उपयोगितावादी शिक्षा

उदारवादी शिक्षा का अंग्रेजी रूपान्तरण है– 'Liberal Education' जिसे 'Non-Vocational Education' या 'व्यवसायिक शिक्षा' भी कहते हैं। यह प्रायः सामान्य शिक्षा होती है जिसमें साहित्य, कला, राजनीति, नीतिशास्त्र आदि की प्रधानता होती है। इसके अन्तर्गत सामान्य ज्ञान की शिक्षा, मूल्य, आचरण, नागरिक दायित्वों के निर्वहन आदि की शिक्षा दी जाती है।

उपयोगितावादी शिक्षा का अंग्रेजी रूपानतरण है– 'Utilitraian Education' अर्थात् 'उपयोगी शिक्षा'। इस शिक्षा प्रणाली में व्यवसायिक शिक्षा दी जाती है। यह शिक्षा जीविकोपार्जन व अर्थोपार्जन के उद्‌देश्यों को लेकर चलती है। इसमें कला, शिल्प, व्यवसाय, रोजगारपरक विषयों की प्रधानता होती है। इस शिक्षा का प्रारम्भ माध्यमिक स्तर से हो जाता है।

माध्यमिक शिक्षा–

भारत सरकार ने 23 सितम्बर 1952 को **डॉ0 लक्ष्मणस्वामी मुदालियर** की अध्यक्षता में माध्यमिक शिक्षा आयोग की स्थापना की। इसमें माध्यमिक शिक्षा को दो भागों में विभाजित करने की संस्तुति प्रस्तुत की गयी। वे दो भाग हैं–

1. निम्न माध्यमिक स्तर
2. उच्च माध्यमिक स्तर

माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार– ''शिक्षा का वह स्तर जिसमें 14–18 वर्ष तक के विद्यार्थी कक्षा 9, 10, 11, 12 में कला एवं विज्ञान वर्ग में अध्ययनरत् रहते हैं। माध्यमिक शिक्षा कहलाती है।''

माध्यमिक शिक्षा आयोग की नीति थी कि माध्यमिक स्तर पर शिक्षा को व्यवसायिक बनाया जाये जिससे निम्न माध्यमिक स्तर पर 30 प्रतिशत तथा उच्च माध्यमिक स्तर पर 50 प्रतिशत छात्र व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकें। माध्यमिक शिक्षा परिषद, उ0प्र0 भारत का प्रथम शिक्षा बोर्ड था जिसने 10+2 परीक्षा पद्धति अपनायी थी। इसकी स्थापना सन् 1921 में प्रयागराज में संयुक्त प्रानत वैधानिक परिषद (United Province Legislature Council) के एक अधिनियम द्वारा की गयी थी।

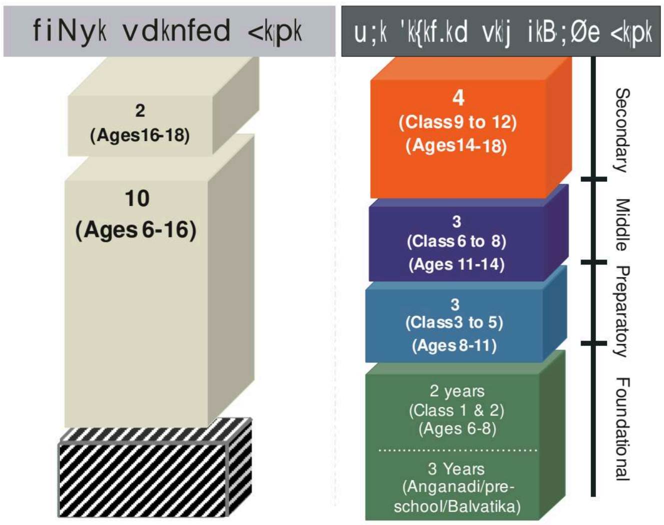
सन् 1921 में भारत सरकार ने सभी क्षेत्रों के लिए एक संयुक्त बोर्ड स्थापित करने का सुझाव दिया जिसका नाम– ''बोर्ड ऑफ हाईस्कूल एण्ड इण्टरमीडिएट एजुकेशन राजपुताना'' रखा गया। 1952 में इसका नाम बदलकर– ''केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड'' कर दिया गया। वर्तमान में सम्पूर्ण भारत में लगभग 18006 माध्यमिक विद्यालय, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त है।

माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक शिक्षा व उच्च शिक्षा के मध्य सम्पर्क सूत्र का कार्य करती है तथा व्यक्ति को व्यवसाय की ओर उन्मुख करके भावी जीवन हेतु तैयार करती है। व्यवसाय वर्तमान में शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देय बन चुका है।

नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षा–

इस राष्ट्रीय शिक्षा का विजन भारतीय मूल्यों से विकसित शिक्षा प्रणाली है जो सभी को उच्चतर गुणवत्ता शिक्षा उपलब्ध कराके और भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाकर भारत को एक जीवांत और न्यायसंगत ज्ञान समाज में बदलने के लिये प्रत्यक्ष रूप से योगदान करेगी। नीति में परिकल्पित है कि हमारे संस्थानों की पाठ्यचर्या और शिक्षाविधि छात्रों में अपने मौलिक दायित्वों और संवैधानिक मूल्यों, देश के साथ जुड़ाव और बदलते विश्व में नागरिक की भूमिका और उत्तरदायित्वों की जागरूकता उत्पन्न करे। नीति का विजन छात्रों में भारतीय होने का गर्व न केवल विचार में बल्कि व्यवहार, बुद्धि और कार्यों में भी और साथ ही ज्ञान कौशल, मूल्यों और सोच में भी होना चाहिये जो मानवाधिकारों, स्थायी विकास और जीवनयापन तथा वैश्विक कल्याण के लिये प्रतिबद्ध हो, ताकि वे सही मायने में वैश्विक नागरिक बन सकें।

<u>ग्राफ सं0–1</u>



नई शिक्षा नीति के 2020 के अन्तर्गत स्कूली शिक्षा–

यह नीति वर्तमान की 10+2 वाली स्कूली व्यवस्था को 3 से 18 वर्ष के सभी बच्चों के लिये पाठ्यचर्या और शिक्षण–शास्त्रीय आधार पर 5+3+3+4 की एक नई व्यवस्था में पुनगर्ठित करने की बात करती है, जैसा कि यहां दी गयी आकृतियों में दिया गया है।

वर्तमान में उसे 6 वर्ष की उम्र के बच्चे 10+2 वाले ढाँचे में शामिल नहीं है क्योंकि 6 वर्ष के बच्चों को कक्षा 1 में प्रवेश दिया जाता है। नये 5+3+3+4 ढांचे में 3 वर्ष के बच्चों को शामिल कर प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ICCI) की एक मजबूत बुनियाद को शामिल किया गया है जिससे आगे चलकर बच्चों का विकास बेहतर हो, वे बेहतर उपलब्धियां हासिल कर सकें और खुशहाल हों।

व्यवसाय–

व्यवसाय का अर्थ है कोई ऐसा कार्य करना जिससे जीवन में उन्नति हो सके और जीवन की सामाजिक, आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके और जीविकोपार्जन किया जा सके। आधुनिक युग में व्यवसाय किसी समाज व देश की उन्नति का आधार माना जाता है। व्यवसाय आधुनिक समाज का एक अभिन्न अंग है। अर्थात् हम कह सकते हैं कि व्यवसाय का तात्पर्य व्यक्ति की क्षमता व योग्यतानुसार विशेष क्षेत्र में आजीविका की प्राप्ति। आजीविका मानव–मात्र की मूलभूत आवश्यकता है। इसके लिए उचित व्यवसायिक

दृष्टिकोंण आवश्यक है। उचित व्यवसायिक दृष्टिकोंण के अभाव में व्यक्ति के अन्दर व्यवसाय चयन को लेकर द्वन्द की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

द्वन्द–

द्वन्द से तात्पर्य ऐसी स्थिति से है जहाँ दो या दो से अधिक विचारों के मध्य संघर्ष या प्रतिरोध उत्पन्न हो जाता है। जब दो समान परन्तु अमेल विचारों या कार्यों के क्रियान्वयन हेतु व्यक्ति एक ही समय में बाध्य हो जाता है तो इससे उसमें द्वन्द उत्पन्न होता है। द्वन्द मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं।

1. उपागम–उपागम द्वन्द
2. परिहार–परिहार द्वन्द
3. उपागम–परिहार द्वन्द
4. द्विउपागम–परिहार द्वन्द

अतः जब व्यक्ति दो या दो से अधिक व्यवसायों के मध्य चुनाव को लेकर बाध्य हो जाता है तथा चयन नहीं कर पाता तब व्यवसायिक द्वन्द की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

1. उपागम–उपागम द्वन्द–

जब व्यक्ति के सामने दो धनात्मक लक्ष्य होते हैं जो समान रूप से महत्वपूर्ण व रूचिपूर्ण लक्ष्य होते हैं, जिन्हें व्यक्ति एक ही समय में प्राप्त करना चाहता है, वहाँ उपागम–उपागम द्वन्द होता है।

2. परिहार–परिहार द्वन्द–

जब व्यक्ति के सामने दो ऋणात्मक लक्ष्य होते हैं जो उसके लिए हानिकारक हो परन्तु उसे उनमें से किसी एक का चयन करना होता है, तो यह स्थिति परिहार–परिहार द्वन्द कहलाती है।

3. उपागम–परिहार द्वन्द–

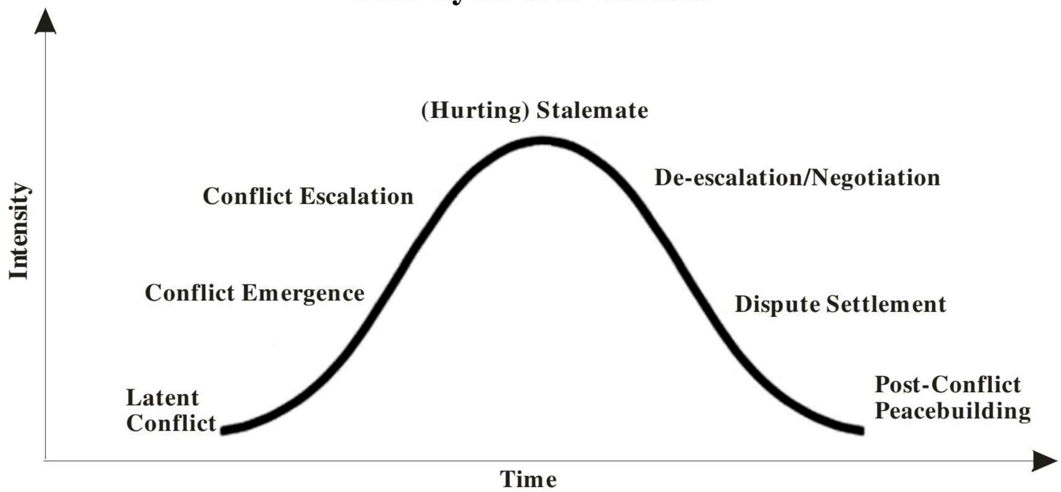
जब व्यक्ति के सामने एक ही लक्ष्य होता है परन्तु उस लक्ष्य के प्रति विरोध की भावना भी व्यक्ति के मन में उत्पन्न हो जाती है तब वह उस लक्ष्य को प्रापत भी करना चाहता है परन्तु विरोधी भावों के कारण उससे दूर भी रहना चाहता है तो वहाँ उपागम–परिहार द्वन्द की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

4. बहु–उपागम परिहार द्वन्द–

जब व्यक्ति के सामने ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है जब उसे कई धनात्मक एवं ऋणात्मक लक्ष्यों का सामना एक साथ करना पड़ता है, ऐसी परिस्थिति में उत्पन्न हुए द्वन्द को द्विउपागम–परिहार द्वन्द या बहु–उपागम परिहार द्वन्द कहते हैं।

ग्राफ सं0–2

Life Cycle of A Conflict



व्यावसायिक द्वन्द–

वर्तमान परिदृश्य से सामना करने के लिए प्रत्येक किशोर को अपनी रूचि, क्षमताओं, योग्यताओं व दृष्टिकोंण से उपयुक्त व्यवसाय का चयन करना होता है। इसके लिए सर्वप्रथम योजना की आवश्यकता होती है। व्यवसाय चयन से पूर्व अपनी रूचियों के बारे में जानना व व्यवसाय सम्बन्धित महत्वपूर्ण जानकारी जुटाना सबसे महत्वपूर्ण काम है। व्यवसायिक चयन का सबसे महत्वपूर्ण चरण किशोरावस्था है। व्यवसाय चयन में छात्रों की रूचि व योग्यता के अतिरिक्त माता–पिता का प्रभाव, शैक्षिक प्राप्ति, लिंग, रोजगार के अवसर और अन्य कारक शामिल हैं। ये कारक कभी–कभी व्यवसाय के चुनाव में अवरोधक का कार्य करते हैं जो कि छात्रों को द्वन्द की स्थिति में ले जाते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की सिफारिशों के पश्चात् 10वीं कक्षा के बाद स्कूली पाठ्यक्रम को शैक्षणिक और व्यावसायिक धाराओं में विविधता प्रदान की गयी। व्यवसायिक द्वन्द की स्थिति बड़ी संख्या में छात्रों को प्रभावित करती है। किशोरावस्था वही अवधि है जब छात्र के जीवन में बड़ा मोड़ आता है क्योंकि उसका भविष्य इस स्तर पर चयनित विषय पर निर्भर करेगा। इस स्तर पर व्यवसायिक द्वन्द की स्थिति उत्पन्न करने वाले सबसे महत्वपूर्ण कारक हैं– सामाजिक प्रभाव, शिक्षा प्राप्ति, व्यक्तिगत, कार्य–संस्कृति, पारिवारिक प्रभाव और लिंग भेद।

1.2 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :

वर्तमान समय में व्यवसाय, शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। अतः व्यवसाय से सम्बन्धित तथ्यों की जानकारी होना व उससे सम्बन्धित समस्याओं के प्रति जागरूक होना अत्यन्त आवश्यक है। शोध–कार्य के माध्यम से इनके बारे में सटीक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

कुछ विद्यार्थी व्यवसाय चयन को लेकर दुविधा की स्थिति में रहते हैं जिसके कारण वे सही व्यवसाय का चुनाव नहीं कर पाते हैं। इसे ही व्यावसायिक द्वन्द कहते हैं। प्रस्तुत शोध के माध्यम से प्राप्त परिणाम द्वारा छात्र एवं छात्राओं में व्यवसाय द्वन्द की समस्या उत्पन्न होने के कारणों को जानकर उनके समाधान के विकल्प प्रस्तुत कर सकते हैं। इस शोध के द्वारा उच्च माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण व शहरी छात्र–छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द का अध्ययन करके उन्हें व्यवसाय सम्बन्धी निर्देशन व परामर्श उपलब्ध कराया जा सकता है जिससे वे उचित व्यवसाय की ओर अग्रसर हो सकें। इसके साथ ही शिक्षकों को छात्र एवं छात्राओं की स्थिति के प्रति जागरूक किया जा सकता है जिससे शिक्षक छात्र एवं छात्राओं के व्यवसायिक द्वन्द की स्थिति के अनुसार ही निर्देशन व परामर्श योजना का निर्माण कर सकते है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से हम यह ज्ञात कर सकते हैं कि छात्रों में व्यावसायिक द्वन्द की स्थिति क्यों व किन कारणों से उत्पन्न होती है, उन कारणों को दूर करने के लिए व उनका सामना करने के लिए उन्हें पहले से ही तैयार किया जा सकता है तथा प्रस्तुत शोध के माध्यम

से सम्बन्धित क्षेत्र में नवीन जानकारियों व तथ्यों की खोज को बढ़ावा मिलेगा। प्रस्तुत शोध व्यावसायिक द्वन्द की समस्या को दूर करने हेतु नये–नये विकल्प व विधियाँ निर्मित करती है जिसका उपयोग व जानकारी ना सिर्फ छात्र–छात्राओं बल्कि अध्यापकों के लिये भी आवश्यक है।

अवसरों के अभाव में कई बार यह देखने को मिलता है कि छात्र–छात्राएं उन विषयों का चयन कर लेते हैं जिनमें उनकी रूचि व योग्यता नहीं होती है जिससे वे उस विषय का ज्ञान तो प्राप्त कर लेते हैं परन्तु सम्बन्धित विषय क्षेत्र में निपुणता प्राप्त नहीं कर पाते। ऐसी स्थिति में जब व्यवसाय चयन की बात आती है तो वह दुविधा की स्थिति में आ जाते हैं जिसका प्रमुख कारण जानकारी का अभाव तथा उचित मार्गदर्शन ना मिलना है। यह शोध छात्र–छात्राओं को इन पूर्वाग्रहों से निकालकर सही दिशा–निर्देशन में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकता है। छात्र–छात्राओं का अपनी रूचि व योग्यताओं से अनभिज्ञ होना ही उन्हें व्यावसायिक द्वन्द के मार्ग की ओर अग्रसर करता है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से छात्र–छात्राओं में दुविधाओं को दूर करने का प्रयास करके उन्हें उनकी रूचि, क्षमता, योग्यता के अनुसार व्यवसाय का चुनाव करने हेतु सुझाव प्रदान किया जा सकता है।

नेगी, सुष्मिता व इशिता (2012), तूर, गुनित (2014), दानी, प्रियंका व हेत्वी देसाई (2018) नाखट, प्रीति (2019) उपरोक्त किये गये शोध कार्यों में व्यावसायिक द्वन्द जैसी समस्या पर कार्य नहीं किया गया है।

शोधार्थी ने इसी को ध्यान में रखते हुये माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन नामक शोध शीर्षक पर कार्य करना प्रारम्भ किया।

1.3 समस्या कथन :

''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन''

1.4 अध्ययन के उद्देश्य :

अनुसंधान कार्य के उद्देश्यों के आधार पर अनुसंधान कार्यों को निम्नांकित दो भागों में बांटा गया है–

1. सामान्य उद्देश्य
2. विशिष्ट उद्देश्य

1. सामान्य उद्देश्य–

किसी भी अनुसधान कार्य का मुख्य उद्देश्य वैज्ञानिक विधि का प्रयोग करके समस्याओं का समाधान खोजना होता है। परन्तु यह ध्यान रखने की बात है अनुसंधान की समस्यायें किसी व्यक्ति विशेष के समक्ष दिन–प्रतिदिन आने वाली समस्यायें (Day to Day Problems) नहीं होती है। परन्तु ऐसी समस्यायें होती हैं जो अभी तक अज्ञात सत्यों, सिद्धान्तों का उपयोगों को सामने लाती है। वस्तुतः प्रत्येक अनुसंधान कार्य की अपनी कोई एक विशिष्ट समस्या एवं अपना

कोई एक स्पष्ट व विशिष्ट उद्देश्य आवश्यक होता है। फिर भी कार्यपूरक दृष्टि से अनुसंधान के सामान्य उद्देश्यों को अग्रांकित रूप में लिखा जा सकता है।

1. भूत या वर्तमान की किसी घटनाक्रम को भली–भाँति समझना।
2. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, समूह या परिस्थिति की विशेषताओं को यथार्थता से जानना।
3. दो या दो से अधिक चरों के बीच अर्न्तसम्बन्धों को ज्ञात करना।
4. कार्य–कारण से सम्बन्धित किसी परिकल्पना का परीक्षण करना।
5. किसी सामान्यीकरण को स्थापित करना।
6. किसी नियम या सिद्धान्त या स्पष्टीकरण का प्रतिपादन करना।
7. किसी क्षेत्र विशेष के विकास के इतिहास, परिवर्तन व स्थिति का अध्ययन करना।

2. विशिष्ट उद्देश्य–

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में व्यवसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण व शहरी छात्रों में व्यवसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण व शहरी छात्राओं में व्यवसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों में व्यवसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं में व्यवसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.5 अध्ययन की परिकल्पनाएँ :

अनुसंधान करने से पूर्व शोध करने वाला शोध समस्या के परिणाम के विषय मे ंजो अनुमान लगाया जाता है परिकल्पना कहलाती है। परिकल्पना को अंग्रेजी में 'Hypothesis' कहते हैं, जो दो शब्दों से मिलकर बना है– Hypo + Thesis. 'Hypo' का अर्थ है– 'सम्भावित' तथा Thesis का अर्थ है– 'कथन' अतः परिकल्पना का अर्थ सम्भावित कथन होगा।

परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ–

''पूर्व चिन्तन'' इसका तात्पर्य यह है कि किसी समस्या के विश्लेषण और परिभाषीकरण के बाद उसमें कारणों तथा कार्य कारण के सम्बन्ध में चिन्तन कर लिया गया है, अर्थात् समस्या का यह कारण हो सकता है कि यह निश्चिय करने के बाद उसका परीक्षण शुरू हो जाता है। अनुसंधान कार्य इस परिकल्पना के निर्माण और उसके परीक्षण के बीच की प्रक्रिया है।

परिकल्पना के निर्माण के बिना न तो कोई प्रयोग हो सकता है और न कोई वैज्ञानिक ढ़ंग का अनुसंधान ही सम्भव है। परिकल्पना के अभाव में अनुसंधान कार्य एक उद्देश्यहीन क्रिया है। कारणों की बहुलता के बीच की प्रक्रिया है।

जोहन सी टाउनसैण्ड के अनुसार– ''परिकल्पना अनुसंधान की समस्या का सुझाया गया उत्तर होता है।''

रैबर तथा रैबर के अनुसार– ''परिकल्पना कोई कथन, प्रतिज्ञप्ति या अभिधारणा है जो किन्हीं तथ्यों के अन्तरिम स्पष्टीकरण का कार्य करती है।''

चैपलिन के अनुसार– ''अनुसंधान की परिकल्पना एक अभिधारणा होती है जो अन्तरिम स्पष्टीकरण का कार्य करती है।''

उपयुक्त परिभाषाओं से स्पष्ट हुआ है कि जब अनुसंधानकर्ता के सामने कोई समस्या आती है तो उसका विश्लेषण करने के बाद वह कुछ सम्भावित सुझाव प्रस्तुत करता है और फिर अनुसंधान कार्य में उस सुझाव की सत्यता की जांच करता है। इसी सुझाव को परिकल्पना कहते हैं।

परिकल्पना के प्रकार–

परिकल्पना के मुख्य निम्नलिखित प्रकार हैं–

1. सकारात्मक परिकल्पना
2. नकारात्मक परिकल्पना
3. शून्य परिकल्पना

सकारात्मक परिकल्पना का कथन किसी अन्तर या प्रभाव या सह–सम्बन्ध को सकारात्मक रूप में प्रस्तुत करता है।

नकारात्मक परिकल्पना का कथन किसी अन्तर या प्रभाव या सह–सम्बन्ध को नकारात्मक रूप में प्रस्तुत करता है।

शून्य परिकल्पना का कथन यह बताता है कि दो चरों में कोई अन्तर नहीं है या दोनों समान है।

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ निर्मित की गई है :–

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के व्यावसायिक द्वन्द में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण व शहरी छात्रों के व्यावसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण व शहरी छात्राओं के व्यावसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के व्यावसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यावसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.6 समस्या में प्रयुक्त पदों का परिभाषीकरण :

1. माध्यमिक स्तर–

माध्यमिक स्तर भारत वर्ष में माध्यमिक शिक्षा देश की शिक्षा का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्तर हैं यह वह स्तर है जो माध्यमिक शिक्षा व उच्च शिक्षा के मध्य एक पुल का कार्य करता है व दोनों को जोड़ता है। सामान्यतः इस स्तर

पर पढ़ने वाले छात्र किशोरावस्था के होते हैं इसलिये इस अवस्था का महत्व और भी बढ़ जाता है।

माध्यमिक शिक्षा ऐसा केन्द्र बिन्दु है, जो प्राथमिक शिक्षा व विश्व विद्यालयी शिक्षा के बीच सम्बन्ध स्थापित करता है। इसके महत्व को हम निम्न बिन्दुओं से लिख सकते हैं–

1. यह प्राथमिक शिक्षा तथा उच्च शिक्षा के बीच कड़ी का काम करती है।
2. इस स्तर पर किशोर/किशोरियाँ जो अध्ययन करते हैं, उनके व्यक्तित्व की शैली उसी पर निर्धारित होती है।
3. यहीं से उनके व्यावसाय की तैयारी आरम्भ होती है।
4. माध्यमिक शिक्षा समाज व शब्द के लिये भी अति महत्वपूर्ण है।
5. यह व्यक्तित्व का विकास करती है।
6. यह सामाजिकता व सामुदायिकता का विकास करती है।
7. माध्यमिक शिक्षा छात्र–छात्राओं की उच्च शिक्षा के लिये आधार तैयार करती है।
8. यही से छात्र–छात्रायें जीवन जीने की कला सीखते हैं।

2. व्यावसायिक द्वन्द–

व्यावसायिक द्वन्द से तात्पर्य उस स्थिति से है जब विद्यार्थियों में दो या दो से अधिक व्यवसायों के मध्य चुनाव को लेकर मानसिक संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होने से है।

1.7 समस्या का परिसीमांकन :

समय एवं संसाधनों को दृष्टिगत रखते हुए शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित परिसीमाएं निर्धारित की गई–

1. प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध जनपद जालौन के अन्तर्गत यू0पी0 बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक सीमित है।
2. शोधार्थी द्वारा व्यावसायिक द्वन्द का अध्ययन महिला–पुरूष; ग्रामीण–शहरी व स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित विद्यालयों तक सीमित है।
3. प्रस्तुत शोध में कक्षा 11 के छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।
4. शोध के अन्तर्गत कुल 88 छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 सम्बन्धित साहित्य का अर्थ

2.2 सम्बन्धित साहित्य का महत्व

2.3 सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन की आवश्यकतायें

2.4 सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के उद्देश्य

2.5 सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के स्रोत

2.6 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के कार्य

2.7 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के लाभ

2.8 सम्बन्धित चरों से सम्बन्धित सर्वेक्षण

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 सम्बन्धित साहित्य का अर्थ :

किसी भी क्षेत्र में साहित्य उस आधारशिला के समान है जिस पर सारा भावी कार्यक्रम आधारित है। अनुसंधान की प्रक्रिया में सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना प्रकरण का एक वैज्ञानिक एवं महत्वपूर्ण चरण है क्योंकि मानव अपने अतीत से संचित तथा लिखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का संचय करता है तथा उसी के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है। शोध प्रबन्ध की वास्तविक योजना एवं उसके संचालन से पूर्व शोधार्थी को अपनी समस्या से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक होता है।

प्रत्येक शोधार्थी को यह भली भांति ज्ञात होना चाहिए कि उसके अन्वेषण के क्षेत्र में कौन–कौन से स्रोत प्राप्त हैं, उनमें से किसका उपयोग उसे करना है तथा वह उन्हें कहाँ से और कैसे प्राप्त कर सकती है? इस प्रकार वह अपने से पहले के अनुसंधानकर्ताओं से सीखकर, अपने बाद आने वालों के बीच की कड़ी बनता है।

किसी भी क्षेत्र का साहित्य, उस आधारशिला के समान है जिस पर भावी कार्य आधारित होता है। हम यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को सुदृढ़ नहीं कर लेते तो हमारा कार्य प्रभावहीन होने के साथ–साथ उसकी पुनरावृत्ति की संभावना रहती है। इसके लिए आवश्यक है कि सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन कर लिया जाये। संदर्भ सामग्री का अन्वेषण शोध कार्यक्रम

का अत्यधिक उपयोगी पक्ष है। शोधार्थी ने अपने शोध क्षेत्र से सम्बन्धित नवीनतम सूचना प्राप्त करने की तीव्र उत्कंठा होनी चाहिए। शोधार्थी को यह जानकारी प्राप्त करने के लिए व्यावहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भिक अवस्था में इसके सैद्धान्तिक एवं शोधित साहित्य का पुर्ननिरीक्षण करना होता है।

अनुसंधान समस्या से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण आलोचनात्मक मूल्यांकन के रूप में होना चाहिए। सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के अभाव में कोई भी अनुसंधान उच्च स्तर का नहीं हो सकता। अतः अध्ययन का विस्तृत विश्लेषण करने से पूर्व, अन्य अनुसंधानकर्ताओं द्वारा सम्पन्न प्रस्तुत शोध समस्या के क्षेत्र को स्पर्श करने वाले शोधों पर विचार करना उचित एवं प्रासंगिक प्रतीत होता है।

किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष शोध प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधार्थी को पूर्व सिद्धान्तों एवं शोधों से भली भांति अवगत होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित करने के लिये व्यावहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भ अवस्था में इसके सैद्धान्तिक एवं शोधित साहित्य की समीक्षा करनी होती है।

वह सामग्री जो समस्या से सम्बन्धित हो तथा वह साहित्य जो अनुसंधान की रूपरेखा बनाने में तथा अनुसंधान को आगे बढ़ाने में सहायता करें, वह सम्बन्धित साहित्य की सामग्री कहलाती है।

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित सभी प्रकार की पुस्तकें, ज्ञान कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध प्रबन्धों तथा अभिलेखों आदि से है। इसके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। जिस प्रकार एक कुशल चिकित्सक के लिये यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषध सम्बन्धी आधुनिक खोजों से परिचित होता रहे।

प्रत्येक शोधार्थी द्वारा अपने शोध कार्य की योजना बनाना तथा उसे क्रियान्वित करने से पहले अपनी समस्या से सम्बन्धित सम्पूर्ण उपलब्ध साहित्य का सावधानीपूर्वक अध्ययन करना, शोधकर्ता की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण चरण है। ज्ञान के किसी भी क्षेत्र में किसी भी उपयुक्त अध्ययन के लिये शोधार्थी, पुस्तकालय तथा उसके अनेक साधनों से पर्याप्त परिचय प्राप्त करना आवश्यक है तभी विशिष्ट ज्ञान के लिये प्रभावी शोध संभव हो सकता है।

परिभाषाएँ– सम्बन्धित साहित्य को स्पष्ट करते हुए विद्वान लिखते हैं–

गुड, बार और स्केट्स के अनुसार ''योग्य चिकित्सक को औषधि के क्षेत्र में हुए नवीनतम अन्वेषणों के साथ चलना चाहिए.... स्पष्टता शिक्षाशास्त्र के विद्यार्थी और शोधकर्ता को शैक्षिक सूचनाओं के साधनों और उपयोगों तथा उनके स्थापन से परिचित होना चाहिए।''

डब्ल्यूअ0आर0 बोर्ग के अनुसार ''किसी भी क्षेत्र का साहित्य उसकी नींव को बनाता है, जिसके ऊपर भविष्य का कार्य किया जाता है। यदि हम साहित्य

की समीक्षा द्वारा प्रदान किये गये ज्ञान की नींव बनाने में असमर्थ होते हैं तो हमारा कार्य सम्भवततया तुच्छ और प्रायः उस कार्य की नकल मात्र ही होता है जो कि पहले ही किसी के द्वारा किया जा चुका है।''

जॉन डब्ल्यू0 बेस्ट के अनुसार– ''व्यावहारिक रूप में सम्पूर्ण मानव ज्ञान, पुस्तकों और पुस्तकालयों में मिल सकता है। अन्य प्राणियों से भिन्न मानव को अतीत से प्राप्त ज्ञान को प्रत्येक पीढ़ी के साथ नये ज्ञान के रूप में प्रारम्भ करना चाहिए। ज्ञान के विस्तृत भण्डार में उसका निरन्तर योगदान प्रत्येक क्षेत्र में मानव द्वारा किये गये प्रयासों की सफलता को संभव बनाता है।''

2.2 सम्बन्धित साहित्य का महत्व :

गुड व स्केट्स ने साहित्य में सर्वेक्षण के महत्व को निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत किया है–

1. ये सर्वेक्षण उन सिद्धान्तों, व्याख्याओं, परिकल्पनाओं आदि को विचार प्रदान करता है जो अपने अध्ययन की समस्या के निर्माण हेतु महत्वपूर्ण होते हैं।
2. यह समस्या के समाधान हेतु अनुसंधान की समुचित विधियों का सुझाव देता है।
3. तुलनात्मक आँकड़ों को प्राप्त करने व उनके सर्वेक्षण में सहायक होता है।
4. सम्बन्धित साहित्य का गंभीर अध्ययन अनुसंधानकर्ता के ज्ञानकोष में वृद्धि करता है।

2.3 सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन की आवश्यकतायें :

साहित्य की समीक्षा निम्नलिखित कारणों से आवश्यक है–

1. शोध कार्य की योजना बनाने में, प्रारम्भिक पदो में से एक रूचि के अनुरूप विशेष क्षेत्र में किये गये शोध कार्यों की समीक्षा करता है, इस शोध का गुणात्मक तथा मात्रात्मक विश्लेषण शोधकर्ता को एक दिशा का संकेत देता है।
2. प्रत्येक अनुसंधानकर्ता के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि वह दूसरों के द्वारा किये गये अपनी समस्या के सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं से भली भाँति अवगत हो। वास्तविक योजना बनाने और अध्ययन करने में यह अत्यन्त महत्वपूर्ण आवश्यक समझा जाता है।
3. यह अध्ययन की समस्या को साधन प्रदान करता है, शोध की समस्या का चयन करने और पहचानने के लिये समानता प्राप्त करता है। शोधकर्ता साहित्य के समीक्षा के आधार पर अपनी परिकल्पनाएँ बनाता है। यह अध्ययन के लिये आधार प्रदान करता है। अध्ययन के परिणामों और निष्कर्षों पर वाद–विवाद किया जा सकता है।

2.4 सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के उद्देश्य :

अनुसंधान कार्य में साहित्य अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्य हैं :–

1. यह सिद्धान्त, विचार, व्याख्याएँ अथवा परिकल्पनाएँ प्रदान करता है जो नयी समस्या के चयन में उपयोगी हो सकते हैं।

2. यह परिकल्पना के लिए साधन प्रदान करता है। शोधकर्ता प्राप्त अध्ययनों के आधार पर शोध परिकल्पनाएँ बना सकता है।

3. यह समस्या के समाधान के लिये उचित विधि, प्रक्रिया, तथ्यों के साधन और सांख्यिकी तकनीकी का सुझाव देता है।

4. यह परिणामों के विश्लेषीकरण में उपयोगी निष्कर्षों और तुलनात्मक तथ्यों को निर्धारित करता है। सम्बन्धित साहित्य अध्ययनों से निकाले गये निष्कर्षों की तुलना की जा सकती है और यह समस्या के निष्कर्षों के लिये उपयोगी हो सकती है।

5. यह शोध किये गये क्षेत्र में शोधकर्ता की निपुणता और सामान्य साहित्य को विकसित करने में सहायक होता है।

डब्ल्यू0 टकमैन (1978) निम्नलिखित उद्देश्य बताते हैं–

1. महत्वपूर्ण चरों को खोजना।
2. जो हो चुका है– उसको करने की आवश्यकता है उसको पृथक करना।
3. शोधकार्य का स्वरूप बनाने के लिये प्राप्त अध्ययनों का संकलन करना।
4. समस्या का अर्थ, उसकी उपयुक्ता, समस्या से इसका सम्बन्ध और प्राप्त अध्ययनों से इसके अन्तर को निर्धारित करना।

अतः अन्य क्षेत्रों की भांति शिक्षा के क्षेत्र में भी शोधकर्ता को किसी विशिष्ट क्षेत्र में, जिसमें वह शोध हेतु समस्या चयन करना है। सैद्धान्तिक व

क्रियात्मक दृष्टि से क्या हो चुका है? इसकी अधिकतम जानकारी होना नितान्त आवश्यक है।

2.5 सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के स्रोत :

पुस्तकालय में उपलब्ध किसी भी शोध के क्षेत्र में विद्यमान सूचना के स्रोत दो प्रकार के हो सकते हैं– प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा साहित्य के रूप में सूचना के प्रत्यक्ष स्रोत अधोलिखित प्रकार में होते है–

1. पत्रिकाओं में उपलब्ध सामयिक साहित्य।
2. ग्रन्थ, एक ही विषय पर निबन्ध–पुस्किाएँ (Monographs), वार्षिक पुस्तकें तथा बुलैटिन।
3. स्नातक, डॉक्टरल तथा अन्य शोध प्रबन्ध।
4. कुछ अन्य विविध स्रोत जैसे– शासन के शिक्षा पर प्रकाशन।

सूचना के अप्रत्यक्ष स्रोत अथवा शिक्षा साहित्य के लिये निर्देशिकाएं निम्न रूपों में होती है :–

1. शिक्षा के विश्व ज्ञान कोश (Encyclopaedias of Education)
2. शिक्षा सूची पत्र (Education Indexes)
3. शिक्षा सार (Education Abstracts)
4. संदर्भ ग्रन्थ सूची एवं निर्देशिकाएँ (Bibliographies & Directories)
5. जीवन गाथा सम्बन्धी संदर्भ (Biographical References)
6. उद्धरण स्रोत (Quotation sources)
7. विविध अन्य स्रोत (Miscellaneous other Sources)

2.6 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के कार्य :

1. यह सम्बन्धित अध्ययन क्षेत्र में किये जा चुके कार्य की जानकारी प्रदान करके अपेक्षित अनुसंधान कार्य को रेखांकित करता है।
2. यह चयनित समस्या की सार्थकता, आवश्यकता तथा महत्व को स्पष्ट करता है एवं अपेक्षित परिणामों के निहितार्थों को इंगित करता है।
3. यह सम्बन्धित सम्प्रत्ययों, अभिधारणाओं व सिद्धान्तों आदि को स्पष्ट करके अनुसंधान के लिये सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है।
4. यह क्या हो चुका है? को क्या करना शेष है? से अलग करके पूर्व में सम्पन्न अनुसंधान कार्यों की पुनरावृत्ति से बचाते हुये उपयोगी समस्याओं को सामने लाता है।
5. यह अनुसंधान कार्य की रूपरेखा को बनाने तथा विस्तृत कार्य योजना के निर्माण में महत्पूर्ण सहायता प्रदान करता है।
6. यह सम्बन्धित अध्ययन क्षेत्र में भावी अध्ययनों के लिये नई व महत्वपूर्ण समस्याओं, जिज्ञासाओं, कठिनाईयों आदि की ओर इशारा करता है।
7. यह अनुसंधान से प्राप्त होने वाले निष्कर्षों की व्यावहारिक उपयोगिता को रेखांकित करके अनुसंधान के महत्व को स्पष्ट करता है।
8. यह अनुसंधानकर्ता को विभिन्न सोपानों पर सावधानी रखते हुये अनजाने में हो सकने वाली तरह–तरह की त्रुटियां करने से बचाते हुये अनुसंधान कार्य को समय, श्रम व व्यय की दृष्टि से मितव्ययी बनाकर उसे अनुसंधानकर्ता के लिये व्यवहारिक तथा सम्भाव्य बनाता है।

2.7 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के लाभ :

- यह पुनरावृत्ति से बचाता है।
- अनुसंधानकर्ता के ज्ञान उसकी स्पष्ट तथा कुशलता को स्पष्ट करता है।
- अब तक इस क्षेत्र में हुये कार्यों की सूचना देता है।
- पहले किये गये आँकड़े, वर्तमान अध्ययन में सहायक होता है।
- यह समस्या के अध्ययन में सूझ पैदा करता है।
- समय की बचत करता है।
- समस्या के सीमांकन में सहायक होता है।
- अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने में सहायता मिलती है।
- शोधकर्ता की त्रुटियों से बचाता है व सावधान रखता है।

2.8 सम्बन्धित चरों से सम्बन्धित भारतीय साहित्य का सर्वेक्षण :

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के महत्व को देखते हुये अनुसंधानकर्ता ने अपने अनुसंधान कार्य से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया है, जिसका विवरण निम्नलिखित है–

भारतीय साहित्य का सर्वेक्षण–

कुमार पाण्डा, भरत (2021) ने ''सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में व्यावसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन'' किया और निष्कर्ष में पाया कि सरकारी और गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक

अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः यह कह सकते हैं कि सरकारी और गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी में एक समान स्तर की व्यावसायिक अभिवृत्ति रहती है। उनकी व्यावसायिक अभिवृत्ति पर उनके विद्यालय को कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

कुमार झा, दिलीप (2019) ने ''उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के बौद्धिक स्तर के सम्बन्ध में उनकी व्यवसायिक रूचियों का अध्ययन'' किया और निष्कर्ष में पाया कि व्यवसाय चयन छात्रों के ज्ञानार्जन, समझ, कलात्मक रूझान आदि विषयों से घनिष्ठतापूर्वक जुड़े हुये है। जिन विद्यालयों में इस कार्यक्रम का अभाव है। वहाँ प्रायः ऐसे विषयों का छात्र चयन कर लेते हैं जिसका उसके व्यावसायिक जीवन में कोई सम्बन्ध नहीं होता है और जब उन लोगों के सामने व्यावसाय चयन की समस्या आती है तो वे पाते हैं कि उनके द्वारा पठित विषयों का सम्बन्ध उनके विषय से नहीं है, तब वे बहुत ही अफसोस करते हैं उन्हें यह सोचकर पश्चात होता है कि उनके व्यवसाय में उनके द्वारा पठित विषयों का कोई योगदान नहीं है।

नाखट, प्रीति (2019) ने अपने शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये–

1. व्यावसायिक द्वन्द तथा मूल्यों, तनाव व शिक्षा के मध्य सह सम्बन्ध का विश्लेषण करना।
2. व्यावसायिक द्वन्द में समाज की भूमिका का अध्ययन करना।

उद्देश्यों के अनुक्रम में शोधकर्ता ने निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया–

1. व्यावसायिक द्वन्द का मूल्य, तनाव व शिक्षा के मध्य सहसम्बन्ध है।
2. व्यावसाय तथा समाज की भूमिका के मध्य सहसम्बन्ध है।

परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु शोधार्थिनी ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जिसमें न्यादर्श के रूप में 1000 विद्यार्थियों का बहुस्तरीय यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया। प्रदत्त संग्रहण हेतु डॉ0 अनीत कुमार व रेखा द्वारा निर्मित कैरियर कॉन्फिलक्ट स्केल (2015) तथा डॉ0 मन्जू अग्रवाल द्वारा निर्मित स्टूडेन्ट्स स्ट्रेस स्केल उपकरणों का प्रयोग किया गया तथा प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सह सम्बन्ध, ANOVA, t-test, f-test विधि का प्रयोग किया गया है जिसके निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुये–

1. व्यावसायिक द्वन्द तथा तनाव, मूल्य व शिक्षा एक दूसरे को प्रभावित नहीं करते हैं।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में व्यावसायिक द्वन्द मुख्यतः सामाजिक कारणों से उत्पन्न होता है।

दानी, प्रियंका व हेत्वी देसाई (2018) ने अपने शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये–

1. माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के व्यवसायिक चयन को प्रभावित करने में शिक्षक, परिवार व समाज की भूमिका का अध्ययन करना।

उद्देश्य के अनुक्रम में शोधकर्ता ने निम्नलिखित परिकल्पना का निर्माण किया—

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यवसायिक चयन में शिक्षक, परिवार व समाज का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

परिकल्पना के परीक्षण हेतु शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जिसमें न्यादर्श के रूप में 120 विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया। प्रदत्त संग्रहण हेतु डॉ0 अनीत कुमार व रेखा द्वारा निर्मित कैरियर कानफिल्क्ट स्केल तथा सैमुअल, क्लार्क, जेन, कोशचिर द्वारा निर्मित कैरियर डिसीजन स्केल का प्रयोग किया गया तथा प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सहसम्बन्ध परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसके निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुये—

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यवसायिक चयन में मुख्य रूप से शिक्षक, परिवार व समाज का प्रभाव नहीं पड़ता है अपितु कई कारक मिलकर, व्यवसाय चयन को प्रभावित कर सकते हैं।

बरानी डरन, एस0 (2018) ने ''विवाहित कार्यरत महिलाओं के मध्य व्यावसायिक तनाव, पारिवारिक तनाव एवं मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव'' पर अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि पारिवारिक द्वन्द्व के साथ कार्य तनाव तथा पारिवारिक तनाव के साथ कार्य द्वन्द्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तूर, गुनित (2014) ने अपने शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये—

1. स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्र एवं छात्राओं के कैरियर चुनाव की क्षमता का अध्ययन करना।

उद्देश्यों के अनुक्रम में शोधकर्ता ने निम्नलिखित परिकल्पना का निर्माण किया–

1. स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्र एवं छात्राओं के कैरियर चुनाव की क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना के परीक्षण हेतु शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जिसमें न्यादर्श के रूप में 900 विद्यार्थियों का बहुस्तरीय यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया। प्रदत्त संग्रहण हेतु सिंह (1999) द्वारा निर्मित कैरियर डिसीजन मेकिंग इन्वेन्टरी तथा बेट्ज व टेलर (2006) द्वारा निर्मित कैरियर डिसीजन सेल्फ एफिशियन्सी स्केल का प्रयोग किया गया तथा प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु t-ratio, One-way ANOVA तथा सह सम्बन्ध का प्रयोग किया गया जिसके निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुये–

1. स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्र एवं छात्राओं के कैरियर चुनाव की क्षमता में सार्थक अन्तर पाया गया है। वित्तपोषित विद्यालयों की तुलना में स्ववित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में कैरियर चुनाव की उच्च क्षमता है।

नेगी, सुष्मिता व इशिता दास रॉय (2012) ने अपने शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये।

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में व्यवसायिक चयन को प्रभावित करने वाले कारकों का पता करना।

उद्देश्यों के अनुक्रम में शोधकर्ता ने निम्नलिखित परिकल्पना का निर्माण किया–

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के व्यवसायिक चयन में अन्य कारकों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

परिकल्पना के परीक्षण हेतु शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जिसमें न्यादर्श के रूप में 120 विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया। प्रदत्त संग्रहण हेतु कैरियर इन्फ्लुएंस क्वेशच्नायर रिट्रीव्ड फ्रॉम बेबसाइट (http://www/wwsfont.edu/libthesis003 deccide.pdf) का प्रयोग किया गया तथा प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु काई–वर्ग तथा प्रतिशत विधि का प्रयोग किया गया जिसके निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत् छात्र एवं छात्राओं के व्यवसायिक चयन में अन्य कारकों जैसे– परिवार, माता–पिता, सहपाठी, अखबार, टी0वी0 व इण्टरनेट द्वारा प्राप्त जानकारियों का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

ए0एन0जी0, एल्युटु (2011) ''माता–पिता का सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा इसका विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य तथा व्यावसायिक चुनाव पर प्रभाव'' में अध्ययन किया और निष्कर्ष में ज्ञात किया कि सामाजिक–आर्थिक स्तर विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्यों तथा व्यावसायिक प्राथमिकता को बहुत ज्यादा प्रभावित करते हैं। उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के समूह अपनी पढ़ाई आगे

जारी रखते हैं तथा अच्छा व्यवसाय पाने के लिये कार्यरत रहते हैं जबकि निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के समूह आर्थिक परिस्थिति के फलस्वरूप शैक्षिक कार्य को जारी नहीं रख पाते हैं तथा जीवन यापन का छोटा धंधा ही अपना लेते हैं।

सोनी, श्रीमती रेखा (2010) ने ''स्नातक स्तर के विविध व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति, मूल्यों, सृजनात्मकता व समायोजन का अध्ययन'' शीर्षक पर शोध कार्य किया तथा निष्कर्ष में पाया कि विभिन्न शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण व शहरी छात्रों की व्यवसायिक अभिवृत्ति तथा मूल्यों एवं व्यावसायिक सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

झीलमराम राजमैथी, मजुमदार (2010) ने भारत में पीढ़ी शैक्षिक एवं व्यावसायिक गतिशीलता : सामाजिक एवं धार्मिक आयाम'' में अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि और व्यावसायिक गतिशीलता दोनों पीढ़ीगत तथा परम्परागत पाये गये। व्यावसायिक गतिशीलता, शैक्षिक गतिशीलता से कम पाई गई, शैक्षिक प्रगति व्यावसायिक सुधार को परिवर्तित नहीं करती परन्तु श्रम बाजार में भेदभाव की संभावना को नकारा गया है।

हेन्किन, ऐलन, वी एवं होलीवेल (2009) शहरी अध्यापकों की प्रतिबद्धता का संगठनात्मक द्वन्द्व नवाचार का समर्थन और प्रतिभागिता में साहचर्य'' में अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि व्यावसायिक अनुभव का संगठनात्मक

प्रतिबद्धता के साथ नकारात्मक प्रभाव है। द्वन्द्व का उच्च स्तर के संगठनात्मक प्रतिबद्धता के साथ निम्न स्तर से सहसम्बद्ध है

वाल्फन्ग मेयहर एवं अन्य (2008) ''लिंग व्यावसायिक क्षेत्र और दायित्व का कैरियर सफलता पर प्रभाव'' का अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि पारिवारिक दायित्वों और वस्तुनिष्ठ एवं सकारात्मक कैरियर सफलता बनाम कार्य केन्द्रित क्षेत्र के साथ नकारात्मक सहसम्बन्ध है। पारिवारिक परिस्थितियों, कैरियर सफलता के बीच प्रासंगिक कारकों का प्रभाव नहीं पाया गया। अतः लैंगिक भेद ने दोनों को प्रभावित नहीं किया।

गोविन, एनन मोरान (2005) ने ''तकनीकी शिक्षा के अध्यापक और विकल्पात्मक आधार कैरियर में कार्य संतुष्टि, प्रतिबद्धता और शिक्षण स्थिति'' का अध्ययन किया और अपने निष्कर्ष में पाया कि कार्यक्रम की तैयारी, आयु, शिक्षण कार्यविधि और गैर शिक्षण अनुभव के आधार पर शिक्षण, व्यावसायिक संगठनात्मक वचनबद्धता और कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है एवं केवल अध्यापकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के आधार पर स्वतंत्र चरों में अन्तर पाया जाता है।

लिली, पुष्पम (2003) ने अपने एक शोध पत्र हेतु 725 अध्यापकों पर शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया और पाया कि महिला अध्यापकों की शिक्षण पेशे के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया तथा महिलाओं की कार्य सन्तुष्टि तथा शिक्षण रोजगार के प्रति वृत्ति में सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

सम्बन्धित चरों पर विदेशों में किये गये अध्ययन–

स्मिथ, राबिन वर्ली (1996) ने ''लोरिडा के माध्यमिक विद्यालय के कुल अध्यापकों की विद्यालय सम्बन्धी निर्णय में हिस्सेदारी, व्यावसायिक प्रतिबद्धता तथा विद्यालय कार्य से अनुपस्थिति का अध्ययन'' शीर्षक पर शोध कार्य सम्पन्न कर निष्कर्ष रूप में पाया कि कुल अध्यपकों की विद्यालयी कार्यों के निर्णय में भागीदारी तथा उनके अध्यापन व्यावसायिक प्रतिबद्धता में धनात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया जो कुल अध्यापक विद्यालय के निर्णयों में जितने अधिक हिस्सेदार थे वे अपने व्यवसाय में उतने ही अधिक प्रतिबद्ध पाये गये।

जेक्सिन, सू (1996) ''अल्पसंख्यक छात्रों के परिप्रेक्ष्य में अध्यापकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धताओं की रूपरेखा का अध्ययन'' इन्होने अपने अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष पाये– अधिकांशतया अल्पसंख्यक विद्यार्थी सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुये होते हैं तथा उनके अभिभावक भी अशिक्षित होते हैं। इन छात्रों के प्रति अध्यापकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता सामान्य छात्रों से अधिक व उच्च होनी चाहिये।

चौम्ये, डोनाल्ड (1996) ने ''कनाडा के प्रधानाध्यापकों व कुल अध्यापकों के व्यावसायिक निर्णय–निर्धारण में मूल्यों का स्थान, प्रकृति व प्रभाव ज्ञात करने हेतु अध्ययन'' किया। शोध के निष्कर्ष में पाया गया कि प्रधानाध्यापक व अध्यापक समान रूप से तीन प्रकार से मूल्यों से सर्वाधिक प्रभावित थे। जो प्रधानाचार्यों के निर्णयों के आधार स्तम्भ थे।

लाईबन मैन, जोनिस (1997) ने ''माध्यमिक विद्यालय के गणित अध्यापकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर विभिन्न संसाधनों के पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन'' शीर्षक पर शोध कार्य सम्पन्न कर निष्कर्ष रूप में पाया कि जिन विद्यालयों में संसाधन बौद्धिक स्रोत तथा अभ्यास व प्रयोग के अवसर अधिक थे, उनके परिणाम भी सकारात्मक पाये गये। गणित के विद्यार्थियों में अपने व्यवसाय के प्रति क्षमताएं व वचनबद्धताओं का भाव उच्च स्तर का पाया गया।

केर्बेन, एरीक मार्विन (1997) ''व्यावसायिकरण समाज का अध्यापकों की सीखने एवं शिक्षण कौशल का अध्ययन'' इन्होने अपने अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष पाये– बढ़ते वृत्तिकरण रूपी समाज का अध्यापकों के शिक्षण कौशलों पर भी अपने प्रभाव पड़ता पाया गया। अमेरिकन पब्लिकन स्कूलों के अधिकतर अध्यापक अपने व्यवसाय की क्षमताओं व प्रतिबद्धताओं को परिपूर्ण करने के लिये रि–स्किल पाठ्यक्रमों में भाग लेते देखे गये।

स्टेफेनी, लेयनी हॉलीमेन (2012) ''सशक्तिकरण, नवाचार, व्यावसायिकता द्वन्द्व और शिक्षकों के संगठनात्मक विचार में भाग लेने की क्रिया की व्याख्या करना–– स्नतक कॉलेज, 2012 यूनिवर्सिटी ऑफ IOWA इन्होने निष्कर्ष में पाया कि द्वन्द्व का बढ़ता हुआ स्तर संगठनात्मक विचारों को बहुत ही कम मात्रा में प्रभावित करता है।''

तृतीय अध्याय

शोध अध्ययन का प्रारूप

3.1 अनुसंधान का अर्थ एवं परिभाषा
3.2 अनुसंधान के सामान्य उद्द्देश्य
3.3 अनुसंधान में प्रयुक्त विधि
3.4 प्रयुक्त अध्ययन विधि
3.5 अध्ययन की जनसंख्या
3.6 अध्ययन का न्यादर्श
3.7 चर
3.8 शोध में प्रयुक्त उपकरण
3.9 उपकरणों का प्रशासन
3.10 प्रदत्तों का संकलन
3.11 अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी विधियाँ

शोध अध्ययन का प्रारूप

3.1 अनुसंधान का अर्थ एवं परिभाषा :

मानव प्रगति में अनुसंधान का सर्वाधिक महत्व रहा है। मानव के समक्ष प्रकृति और समय निरन्तर चुनौतियां प्रस्तुत करते रहे हैं। उन्हें दूर करने के लिये मानव तर्क एवं प्रयोग के द्वारा अनुसंधान पर प्रगति के पथ पर अग्रसर हुआ।

अनुसंधान द्वारा उन समस्याओं के समाधान की खोज करने का प्रयत्न किया जाता है जिनका समाधान किसी साहित्य में उपलब्ध नहीं है अथवा मनुष्य की जानकारी में नहीं है। अनुसंधान प्रक्रिया द्वारा प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर किसी समस्या का विश्वसनीय समाधान ढूंढ़ा जाता है।

अनुसंधान में नवीन तथ्यों की खोज की जाती है तथा नवीन सत्यों का प्रतिपादन किया जाता है। शोध कार्यों द्वारा प्राचीन प्रयत्नों तथा तथ्यों का नवीन अर्थात् नये तथ्यों की खोज की जाती है तथा ऐसी परिस्थितियों की जानकारी की जाती है जिनमें विशिष्ट तथ्य क्रियाशील होते हैं तथा अन्य क्रियाशील नहीं होते हैं जबकि वे तथ्य समान प्रतीत होते हैं।

अनुसंधान शब्द अंग्रेजी के Research शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। यह दो शब्दों से मिलकर बना है–

Research = Re + Search

Re- आवृत्ति या बार–बार।

Search- खोज करना।

अर्थात् अनुसधांनकर्ता किसी तथ्य को बार–बार देखता है, सूचनायें एकत्र करता है, खोज करता है तथा निष्कर्ष प्राप्त करता है।

अनुसंधान का तात्पर्य है पूर्व ज्ञान में वृद्धि। जब नवीन शोध द्वारा पूर्व ज्ञान में वृद्धि हो तभी उसे अनुसंधान कहा जायेगा।

रेडमैन एवं मोरी– ''नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिये व्यवस्थित प्रयास ही अनुसंधान है।''

जॉन डब्ल्यू0 बेस्ट– ''अनुसंधान अधिक औपचारिक, व्यवस्थित तथा गहन प्रक्रिया है, जिसमें वैज्ञानिक विधि विश्लेषण को प्रयुक्त किया जाता है। अनुसंधान में व्यवस्थित स्वरूप को सम्मिलित किया जाता है जिसके फलस्वरूप निष्कर्ष निकाले जाते हैं और उनका औपचारिक आलेख तैयार किया जाता है।''

मेक ग्रेथ तथा वाटसन– ''अनुसंधान वह प्रक्रिया है, जिसमें खोज प्रविधि का प्रयोग किया जाता है, जिसके निष्कर्षों की उपयोगिता हो, जो ज्ञान वृद्धि में सहायक है, प्रगति के लिये प्रोत्साहित करे, समाज के लिये सहायक हो तथा मनुष्य को अधिक प्रभावशाली बना सके। समाज तथा मनुष्य को अधिक प्रभावशाली बना सके। समाज तथा मनुष्य अपनी समस्याओं को प्रभावी ढ़ंग से हल कर सकें।

3.2 अनुसंधान के सामान्य उद्देश्य :

प्रत्येक अनुसंधान कार्य की अपनी कोई एक विशिष्ट समस्या एवं अपना कोई एक स्पष्ट उद्देश्य अवश्य होता है, फिर भी कार्यपरक दृष्टि से अनुसंधान के सामान्य उद्देश्य को अग्रांकित रूप में लिया जा सकता है।

1. भूत या वर्तमान की किसी घटनाक्रम को भली–भांति समझना।
2. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, समूह या परिस्थिति की विशेषताओं को यथार्थ से जानना।
3. दो या दो से अधिक चरों के बीच अन्र्तसम्बन्ध को ज्ञात करनां
4. कार्य कारण से सम्बन्धित किसी परिकल्पना का परीक्षण करना।
5. किसी सामान्यकरण को स्थापित करना।
6. किसी नियम या सिद्धान्त या स्पष्टीकरण का प्रतिपादन करना।
7. किसी क्षेत्र विशेष के विकास के इतिहास, परिवर्तन व स्थिति का अध्ययन करना।

3.3 अनुसंधान में प्रयुक्त विधि :

अनुसंधानों को विभिन्न आधारों पर कई ढ़ंग से वर्गीकृत किया गया है परन्तु अनुसंधान कार्य में प्रयुक्त विधि (Method of Research) के अनुरूप अनुसंधानों को अधोलिखित तीन प्रकारों में बांटा गया है–

1. ऐतिहासिक अनुसंधान (Historical Research)
2. वर्णनात्मक अनुसंधान (Descriptive Research)
3. प्रयोगात्मक अनुसंधान (Experimental Research)

ऐतिहासिक अनुसंधान में ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया जाता है। इसमें अतीत के तथ्यों का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार के अनुसंधान में तथ्यों में जोड़–तोड़ नहीं की जाती है। इनकी विषय–वस्तु ऐतिहासिक सामग्री होती है।

वर्णनात्मक अनुसंधान वस्तुतः वर्तमान में विद्यमान परिस्थितियों का अध्ययन करके क्या है? (What is?) प्रश्न का उत्तर देता है। सर्वेक्षण (Survey), घटनोत्तर अध्ययन (Ex-Post-Facto Study), इकाई अध्ययन (Case Study) कुछ प्रमुख वर्णनात्मक, वर्णनात्मक अनुसंधान की विधियाँ हैं।

इसके अध्ययन की विषय वस्तु वर्तमान परिस्थितियों व उनसे प्राप्त सूचनायें होती हैं।

प्रयोगात्मक अनुसंधान में प्रयोगात्मक विधि का उपयोग किया जाता है। यह अनुसंधान भविष्य में होने वाली परिस्थितियों का अनुमानिक अध्ययन करके निष्कर्ष प्रदान करता है।

3.4 प्रयुक्त अध्ययन विधि :

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

सर्वेक्षण विधि–

सर्वेक्षण किसी क्षेत्र, समूह या संस्थान की वर्तमान स्थिति को जानने, उसकी व्याख्या करने व विश्लेषण करने का एक योजनाबद्ध प्रयास होता है। जिसमें विभिन्न उपकरणों जैसे– प्रश्नावली, अनुसूची, साक्षात्कार या परीक्षण आदि के माध्यम से व्यक्तियों से आँकड़े एकत्रित किये जाते हैं।

सर्वेक्षण शब्द का अंग्रेजी रूपान्तरण है– 'Survey; जिसका अर्थ है– 'to lookover' या निरीक्षण करना। इसके अन्तर्गत किसी घटना, समूह या परिस्थिति से सम्बन्धित जानकारियां एकत्र की जाती है तथा सांख्यिकीय

प्रविधियों के द्वारा विश्लेषित की जाती है। इसके अन्तर्गत अध्ययन के लिये किसी एक क्षेत्र से सम्बन्धित समस्या अथवा स्थिति के विषय में ऐसे प्रतिनिधि आँकड़े–न्यादर्श के रूप में एकत्र किये जाते हैं, जो कि समस्या के स्वरूप को लगभग पूर्ण रूप से प्रतिबिम्बित करते हैं।

3.5 अध्ययन की जनसंख्या :

किसी इकाई का समग्र रूप जनसंख्या कहलाता है। यह इकाई–व्यक्ति, वस्तु कुछ भी हो सकती है जिसमें सामान्य विशेषताएं हों जिसके अन्तर्गत अनुसंधानकर्ता को अनुसंधान कार्य करना है। जैसे विद्यालयों का समूह, वर्ग विशेष का समूह, आदि। शोध से प्राप्त निष्कर्षों का सामान्यीकरण सम्पूर्ण इकाई जनसंख्या पर किया जाता है।

'जनसंख्या सीमित भी हो सकती है तथा असीमित भी। सीमित जनसंख्या के अन्तर्गत ऐसी जनसंख्या आती है जिसकी व्यवहारिक रूप से गणना की जा सके। जैसे– विद्यालय में अध्ययनरत् छात्रों की जनसंख्या असीमित जनसंख्या से तात्पय्र ऐसी जनसंख्या से है जिसकी व्यवहारिक रूप से गणना नहीं की जा सकती है जैसे– तारों की जनसंख्या।

जनसंख्या के प्रकार–

1. समजातीय जनसंख्या
2. विषमजातीय जनसंख्या
3. वास्तविक जनसंख्या
4. परिकल्पनात्मक जनसंख्या

समजातीय जनसंख्या वह होती है जिसमें कोई गुण या विशेषता समूह की सभी इकाईयों में समान रूप से विद्यमान हो।

विषमजातीय जनसंख्या वह होती है जिसमें कोई गुण या विशेषता समूह की सभी इकाईयों में समान रूप से ना हो।

वास्तविक जनसंख्या के अन्तर्गत वह जनसंख्या आती है जिसमें समूह की सभी इकाईयों का भौतिक अस्तित्व होता है।

परिकल्पनात्मक जनसंख्या के अन्तर्गत वह जनसंख्या आती है जिसमें समूह की सभी इकाईयों का भौतिक अस्तित्व नहीं होता है बल्कि उनकी परिकल्पना कर ली जाती है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में जनपद जालौन के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में चयनित किया गया है जो कि सीमित, वास्तविक एवं समजातीय है। जालौन जिला में कुल 60 माध्यमिक विद्यालय है जिनमें अध्ययनरत विद्यार्थी लघु–शोध प्रबन्ध की जनसंख्या है।

3.6 अध्ययन का न्यादर्श :

न्यादर्श किसी जनसंख्या से लिया गया वह लघु समूह है जो उस सम्पूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है। किसी अनुसंधान के लिये सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन करना असम्भव है इसलिये उसमें से न्यादर्श का चयन किया जाता है जिस पर किये शोध के द्वारा प्राप्त निष्कर्ष को सम्बन्धित जनसंख्या पर सामान्यीकृत कर दिया जाता है।

गुडे और हॉट के अनुसार– ''एक प्रतिदर्श का केवल प्रतिनिधित्वपूर्ण होना ही पर्याप्त होता है, यदि उसका आकार गुणों की स्थिरता में विश्वास स्थापित करने के लिये पर्याप्त हो।''

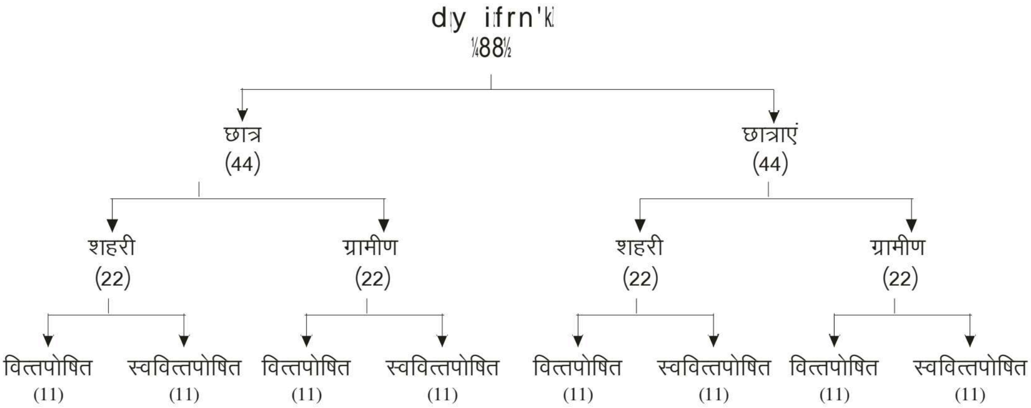
अतः शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यायदर्श के रूप में समस्त जनसंख्या में से केवल 88 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

न्यादर्श प्रक्रिया–

जनसंख्या के रूप में सम्मिलित जालौन जनपद के 60 माध्यमिक विद्यालयों में से कुल 4 माध्यमिक विद्यालयों का चयन लॉटरी विधि के माध्यम से किया गया। इन माध्यमिक विद्यालयों में उपस्थित माध्यमिक स्तर के समस्त विद्यार्थियों ने न्यादर्श के रूप में केवल 88 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से किया गया जिनका विवरण निम्नवत् है–

<table>
<tr><th rowspan="3">माध्यमिक विद्यालय का नाम</th><th colspan="4">छात्राएँ (44)</th><th colspan="4">छात्र (44)</th></tr>
<tr><th colspan="2">शहरी</th><th colspan="2">ग्रामीण</th><th colspan="2">शहरी</th><th colspan="2">ग्रामीण</th></tr>
<tr><th>Pri.</th><th>Govt.</th><th>Pri.</th><th>Govt.</th><th>Pri.</th><th>Govt.</th><th>Pri.</th><th>Govt.</th></tr>
<tr><td>एस0आर0 इण्टर कॉलेज, उरई (जालौन)</td><td rowspan="4">11</td><td rowspan="4">11</td><td rowspan="4">11</td><td rowspan="4">11</td><td rowspan="4">11</td><td rowspan="4">11</td><td rowspan="4">11</td><td rowspan="4">11</td></tr>
<tr><td>सेन्ट जेवियर्स पब्लिक स्कूल, कालपी (जालौन)</td></tr>
<tr><td>स्वामी विवेकनन्द इण्टर कॉलेज, जालौन</td></tr>
<tr><td>आर्यकन्या इण्टर कॉलेज, उरई (जालौन)</td></tr>
</table>

न्यायदर्श आकार–



3.7 चर :

चर से तात्पर्य वस्तु, घटना तथा किसी स्थिति की उन विशेषताओं से होता है जिसे मापा जा सकता है। चर वह गुण या विशेषता है, जिसमें समूह के सदस्य परस्पर कुछ ना कुछ भिन्न होते हैं। जैसे– लम्बाई, भार, आयु, कक्षा।

डी0 एमैटो (1970) के अनुसार– ''किसी प्राणी, वस्तु या चीज के मापने योग्य गुणों को चर कहा जाता है।''

चर मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं–

1. आश्रित चर
2. स्वतंत्र चर
3. संगत चर

किसी भी शोध में आश्रित चर वह होता है जिसके विषय में शोधार्थी कुछ पूर्व कथन करना चाहता है।

स्वतंत्र चर वह चर होता है जिसमें प्रयोगकर्ता जोड़ तोड़ करता है। इसमें शोधार्थी स्वतंत्र चर के मूल्यों में परिवर्तन करके यह देखता है कि इसका आश्रित चर या क्या प्रभाव पड़ता है। ये दो प्रकार का होता है–

1. Type-E स्वतंत्र चर–

जब चरों में जोड़–तोड़ सीधे ढ़ंग से करते हैं तो इसे Type-E स्वतंत्र चर कहते हैं।

2. Type-S स्वतंत्र चर–

जब चरों में सीधे जोड़–तोड़ ना करके चयन द्वारा किया जाये, तो इसे Type-S स्वतंत्र चर कहते हैं। जैसे– आयु, लिंग, धर्म, बुद्धि आदि।

संगत चर को बहिरंग चर भी कहते हैं। ये स्वतंत्र चर की श्रेणी में ही आते हैं। परन्तु प्रयोगकर्ता इसे नियंत्रित करके रखता है तथा इसके प्रभाव को आश्रित चर पर पड़ने से रोकता है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त चर–

1. माध्यमिक स्तर की छात्र–छात्राएं
2. व्यावसायिक द्वन्द्व

3.8 शोध में प्रयुक्त उपकरण :

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द का अध्ययन करने तथा सम्बन्धित प्रदत्त संकलन के लिये नेशनल साइकोलॉजिकल कॉरपोरेशन, आगरा द्वारा प्रकाशित एवं

डॉ0 अनीत कुमार, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, फगवारा पंजाब और **श्रीमती रेखा,** रिसर्च स्कॉलर, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, पंजाब द्वारा निर्मित **'कैरियर कॉनफ्लिक्ट स्केल'** का उपकरण के रूप में प्रयोग किया। उपकरण में कुल 62 कथन दिय गये जो 6 आयामों– सामाजिक, शैक्षिक, व्यक्तिगत कार्य–सांस्कृतिक, परिवार तथा लिंग का व्यावसायिक द्वन्द पर प्रभाव को मापते हैं, जिसे 30–35 मि0 की समयावधि में छात्रों द्वारा पूर्ण किया जाना है। आयाम के अनुरूप कथनों का विवरण निम्नवत् है–

Sr. No.	Dimensions	Item No. (All Positive)	Total Items
1.	Social	1, 12, 16, 17, 19, 22, 24, 27, 28, 33, 40, 41, 45, 47, 49, 50, 51, 54	18
2.	Educational	2, 3, 7, 9, 13, 15, 31, 35, 48	09
3.	Personal	4, 6, 2, 5, 26, 29, 56, 57, 60	08
4.	Work-Culture	10, 30, 36, 44, 53, 58, 59, 62	08
5.	Family	5, 1, 14, 20, 34, 37, 39, 42, 46, 55, 61	11
6.	Gender	8, 18, 21, 23, 32, 38, 43, 52	
		Total	**62**

जिस पर अनुक्रिया पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, पूर्णतः असहमत पर देनी है जिसका अंकन् निम्नवत् किया जायेगा।

Strongly Agree	Agree	Undecided	Disagree	Strongly Disagree
5	4	3	2	1

3.9 उपकरणों का प्रशासन :

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के संकलन हेतु शोधार्थी ने न्यादर्श में चुने गये प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्यों से सम्पर्क कर आँकड़ों के संकलन हेतु अनुमति मांगी। अनुमति मिलने के पश्चात् सम्बन्धित कक्षा के छात्र–छात्राओं

का चयन किया तथा समस्त आवश्यक निर्देश देने के बाद डॉ0 अनीत कुमार व रेखा द्वारा निर्मित प्रश्नावली वितरित की और उसे भरने को कहा तथा यह आश्वासन दिया कि उनके द्वारा दी गयी समस्त जानकारी को गोपनीय रखा जायेगा। इस प्रश्नावली को भरने हेतु छात्र–छात्राओं को 30 मि0 का समय दिया गया। विद्यार्थियों द्वारा प्रश्नावली भरने के पश्चात् आंकड़ों का एकत्रीकरण किया गया।

कक्षा के परीक्षण पत्र वितरण करने में पूर्व निर्देश दिये।

- प्रश्नों को अच्छे ढ़ंग से पढ़कर अपना मद दें।
- प्रत्येक प्रश्न में सिर्फ एक ही कोष्ठक में चिन्ह लगायें।
- व्यक्तिगत जानकारी सावधानीपूर्वक भरें।
- अपनी जानकारी पूर्णतः गोपनीय रखी जायेगी।
- निर्धारित समयानुसार छात्रों / छात्राओं से भरने को कहा गया।

3.10 प्रदत्तों का संकलन :

उपयुक्त समय के पश्चात् परीक्षण पत्र वापिस ले लिये गये हैं। इसी प्रकार शोधकर्ता ने सभी विद्यालयों में अपने शोध कार्य हेतु आँकड़ों का संग्रह किया। आँकड़ों के संग्रह के पश्चात परीक्षण का फलांकन कर लिया गया और सभी छात्र / छात्राओं को धन्यवाद किया गया।

3.11 अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी विधियाँ :

सांख्यिकी अंग्रेजी भाषा के शब्द 'Statistics' का हिन्दी रूपान्तरण है। Statistics, Latin भाषा के 'Status' तथा Italian भाषा के Statista से जन्मा है। सांख्यिकी द्वारा प्रयोगों से प्राप्त आँकड़ों का वर्गीकरण व विवेचना की जाती है।

प्रो0 वाडिंगटन के अनुसार– ''सांख्यिकी अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य भूतकालीन एवं वर्तमान तथ्यों की तुलना करके यह ज्ञात करना है जो भी परिवर्तन हुये हैं, अंक क्या–क्या कारण हैं और जो भी परिणाम भविष्य में हो सकते हैं।''

प्रदत्तों का निर्वाचन करने के लिये प्रतिशत, मध्यमान, मानक विचलन का प्रयोग किया गया। इसी के अनुरूप प्रदत्तों का ग्राफीय प्रदर्शन भी किया गया। परिकल्पना परीक्षण के लिये दो समूहों में अन्तर की सार्थकता हेतु t-परीक्षण का उपयोग किया गया। सांख्यिकी में प्रयुक्त सूत्रों का विवरण निम्नवत् है–

1. मध्यमान (Mean)
2. मानक विचलन (Standard Deviation)
3. टी–टेस्ट (T-Test)
4. मानक त्रुटि (Standard Error)
5. स्वतंत्राश अंश (Degree of Freedom)
6. सार्थकता स्तर (Meaningful Level)

1. मध्यमान (Mean)–

किसी अंक सामग्री के समस्त अंकों के योगफल को उन अंकों की संख्या से भाग देने पर जो भागफल प्राप्त होता है, उसे मध्यमान कहते हैं। मध्यमान ज्ञात करने के लिये निम्न सूत्र का प्रयोग किया गया है–

$$M = \frac{\sum x}{N}$$

उपरोक्त सूत्र में,

M= मध्यमान,

$\sum x$= प्रदत्तों का योग तथा

N= प्रदत्तों की संख्या।

2. मानक विचलन (Standard deviation)–

जब अधिक विश्वसनीयता की आवश्यकता होती है तब शोध प्रक्रिया में इसकी परिगणना आवश्यक हो जाती है। इसमें विचलनों के वर्गों का योगफल ज्ञात करके उसमें प्राप्तांकों की संख्या ज्ञात करके उसमें प्राप्तांकों की संख्या (N) से भाग दिया जाता है फिर भजनफल का वर्गमूल निकाला जाता है। इसको ज्ञात करने के लिये निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया गया है–

$$S.D. = \sqrt{\frac{\sum (X - M)^2}{N}}$$

X-M= x तो

$$\boxed{SD \text{ or } \sigma = \sqrt{\frac{\sum x^2}{N}}}$$

जहाँ,

X= प्राप्तांक

M = मध्यमान

$\sum(X-M)^2$ =प्राप्तांकों का मध्यमान के लिये विचलनों के वर्गों का योग

N = प्राप्तांको की कुल संख्या

3. टी–परीक्षण (t-Test)–

दो मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की परख के लिये t-test का प्रयोग किया गया है–

$$\boxed{t = \frac{(M_1 \sim M_2)}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}}}$$ जब N>30 हो

$$\boxed{t = \frac{(M_1 \sim M_2)}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1 - 1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2 - 1}}}}$$ जब N<30 से कम हो

उपरोक्त सूत्र में,

M_1 तथा M_2 क्रमशः प्रथम व द्वितीय समूह के मध्यमान है।

σ_1 तथा σ_2 क्रमशः प्रथम व द्वितीय समूह के प्रमाणिक विचलन हैं।

N_1 तथा N_2 क्रमशः प्रथम व द्वितीय समूह के विद्यार्थियों की संख्या है।

4. प्रमाणित त्रुटि (Standard Error) –

स्थितियों में दो मध्यमानों के अन्तर प्रतिचयन वितरण का मानक विचलन से दो मध्यमानों के अन्तर की प्रमाणित त्रुटि कहते हैं।

दोनों मध्यमानों से दोनों प्रतिदर्शों की मानक विचलनों तथा आकारों का प्रयोग करके दो मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि ज्ञात की जा सकती है।

जब प्रतिदर्श बड़ा हो अर्थात् N_1 तथा $N_2 \geq 30$

$$\sigma D = \sqrt{\frac{S_1^2}{N_1} + \frac{S_2^2}{N_2}}$$

जब दोनों प्रतिदर्शों का आकार छोटो हो N_1 तथा $N_2 \geq 30$

$$\sigma D = \sqrt{\frac{S_1^2}{N_1 - 1} + \frac{S_2^2}{N_2 - 1}}$$

जहाँ,

$\sigma D =$ प्रमाणिक त्रुटि

S_1 तथा $S_2 =$ प्रथम तथा द्वितीय प्रतिदर्श के लिये मानक विचलन

N_1 तथा $N_2 =$ प्रथम तथा द्वितीय प्रतिदर्श का आकार

5. स्वतंत्रता के अंश (Degree of Freedom)–

यह 't' मानों की सार्थकता के लिए प्रयुक्त होते हैं

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में स्वतंत्रता अंश की गणना N_1+N_2-2 सूत्र द्वारा की गयी है जिसमें N_1 तथा N_2 क्रमशः प्रथम व द्वितीय समूह के विद्यार्थियों की संख्या प्रदर्शित करते हैं।

6. सार्थकता स्तर (Significance Level)–

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में परिगणित t-मान के द्वारा परिकल्पना की स्वीकृति या अस्वीकृति .05 सार्थकता स्तर पर की गयी है।

चतुर्थ अध्याय

प्रदत्तों का विश्लेषण तथा परिकल्पना परीक्षण

4.1 प्रदत्तों का विश्लेषण

4.2 प्रथम शून्य परिकल्पना का परीक्षण

4.3 द्वितीय शून्य परिकल्पना का परीक्षण

4.4 तृतीय शून्य परिकल्पना का परीक्षण

4.5 चतुर्थ शून्य परिकल्पना का परीक्षण

4.6 पंचम शून्य परिकल्पना का परीक्षण

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं परिकल्पना परीक्षण

4.1 प्रदत्तों का विश्लेषण :

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में व्यवसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है जिसमें छात्र एवं छात्राओं को ग्रामीण, शहरी एवं स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् के आधार पर विभाजित करके प्रदत्तों का संकलन किया गया है। न्यादर्श तालिका के अनुरूप 88 छात्र एवं छात्राओं का चयन किया गया जिसमें 44 छात्र एवं 44 छात्राएं सम्मिलित हैं।

सूचियों एवं प्रश्नावली के रूप में संकलित आँकड़े स्वतः स्पष्ट नहीं है। वे शुद्ध आँकड़ों के रूप में होते हैं। शोध अध्ययन अविभिन्न पूर्व वर्णित एवं चयन किये गये न्यादर्श पर परीक्षणों के प्रशासन करने के पश्चात प्राप्त सामग्री अपने प्रारम्भिक क्रम में अस्पष्ट होती है। यह विस्तृत तथा काफी उलझी हुई होती है। अतः इन्हें अर्थपूर्ण बनाने के क्रम में प्रस्तुत करने योग्य बनाना पड़ता है।

इस प्रकार विश्लेषण का मुख्य उद्देश्य है। संग्रहित सामग्री से नवीन तथ्यों को प्राप्त करना, परिकल्पना का परीक्षण करना और वैज्ञानिक निष्कर्ष पर पहुंचने में सहायता प्रदान करना है। अतः समस्या के सम्बन्ध में निश्चित ज्ञान की प्राप्ति हेतु विश्लेषण किया जाना आवश्यक है।

प्रदत्तों के विश्लेषण के कार्य–

- प्रदत्तों को स्पष्ट बनाना।
- परिणाम से सार्थकता लाना।

- सामान्यीकरण व अनुमान लगाना।
- शून्य परिकल्पना का परीक्षण करना।

उपकरण की विश्वसनीयता, वैधता आदि गुण, तथ्यों की वैधता आदि तब तक निरर्थक है जब तक तथ्य अव्यवस्थित है। अतः उनसे किसी उपयुक्त निष्कर्ष तक नहीं पहुंचा जा सकता है। अतः उनको सुव्यवस्थित एवं सुसंगठित करने की अति आवश्यकता होती है।

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने उचित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करके प्रतिदर्शों से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण किया है। शोधकर्ता ने अपने लघु शोध अध्ययन में कुल 5 परिकल्पनाओं का निर्माण किया है। इन परिकल्पनाओं का शोधकर्ता ने क्रमशः परीक्षण निम्न प्रकार से किया है–

4.2 प्रथम शून्य परिकल्पना का परीक्षण :

परिकल्पना क्रमांक– 01 :

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के व्यवसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

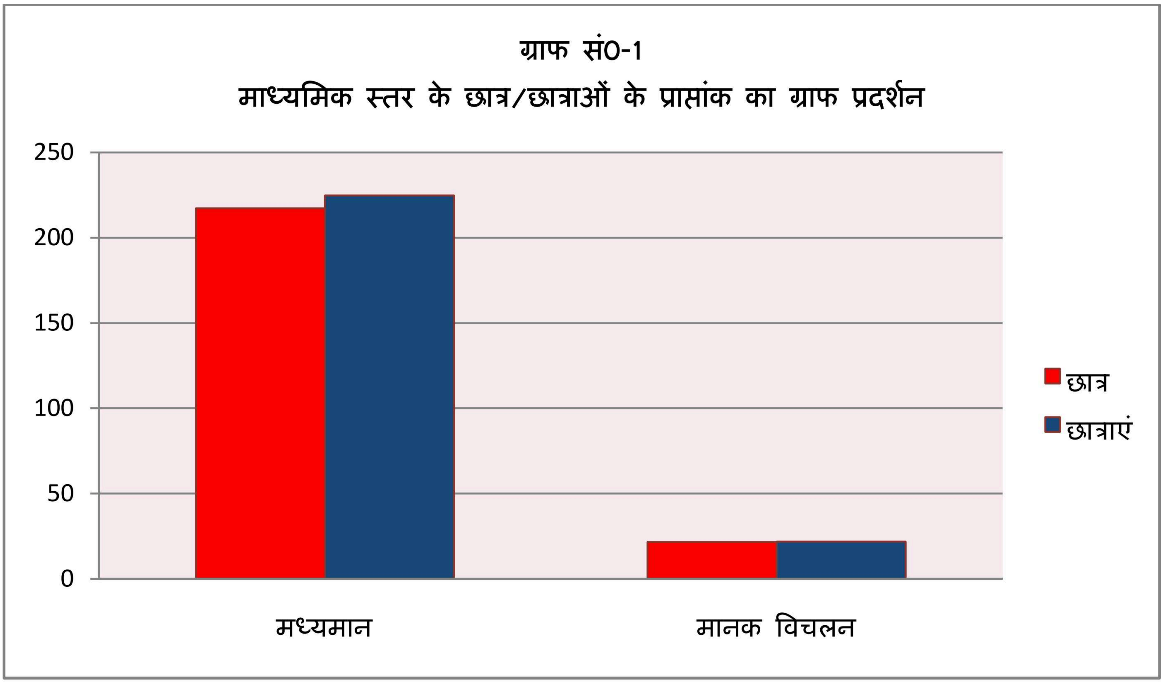
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन के समंकों की संक्षिप्त तालिका

तालिका संख्या 4.2.1

विवरण	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	स्वतंत्राश	t-मान	सार्थकता
छात्र	44	217.36	21.67	4.97	86	1.5	.05 स्तर पर स्वीकृत
छात्राएं	44	224.84	24.94				

तालिका क्रमांक 4.2.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों का मध्यमान 217.36 एवं मानक विचलन 21.67 प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार छात्राओं का मध्यमान 224.84 तथा मानक विचलन 24.94 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों की परिगणित मानक त्रुटि 4.97 है तथा टी–मान 1.5 प्राप्त हुआ है जो 86 स्वतन्त्रांश के .05 स्तर पर सारणीमान 1.99 से कम है।

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के व्यावसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।


ग्राफ सं0-1
माध्यमिक स्तर के छात्र/छात्राओं के प्राप्तांक का ग्राफ प्रदर्शन
250
200
150
100
50
0
मध्यमान
मानक विचलन
छात्र
छात्राएं

4.3 द्वितीय शून्य परिकल्पना का परीक्षण :

परिकल्पना क्रमांक– 02:

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के व्यावसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन के समंकों की संक्षिप्त तालिका

तालिका संख्या 4.3.1

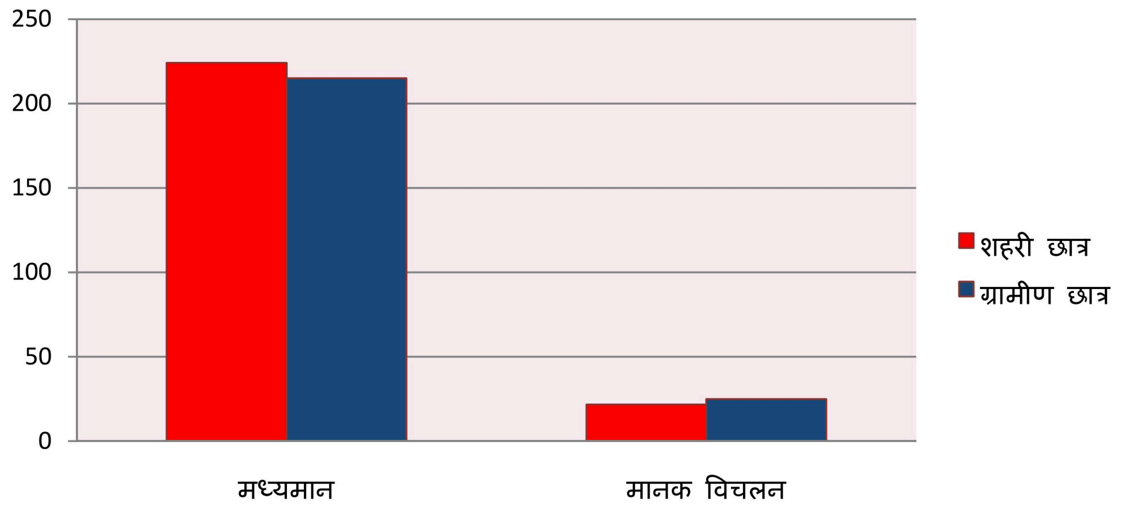
विवरण	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	स्वतंत्राश	t-मान	सार्थकता
ग्रामीण छात्र	22	224.2	19.97	6.77	42	1.35	0.05 स्तर पर स्वीकृत
शहरी छात्र	22	215	24.72				

तालिका क्रमांक 4.3.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण छात्रों का मध्यमान 224.2 एवं मानक विचलन 19.97 है तथा शहरी छात्रों का मध्यमान 215 एवं मानक विचलन 24.72 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों की परिगणित मानक त्रुटि 6.77 है तथा टी–मान 1.35 प्राप्त हुआ है जो 42 स्वतंत्राश के .05 स्तर पर सारणीमान 2.02 से कम है।

माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत् ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के व्यावसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

ग्राफ सं0-2

माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के प्राप्तांक का ग्राफ प्रदर्शन



4.4 तृतीय शून्य परिकल्पना का परीक्षण :

परिकल्पना क्रमांक– 03

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के व्यावसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

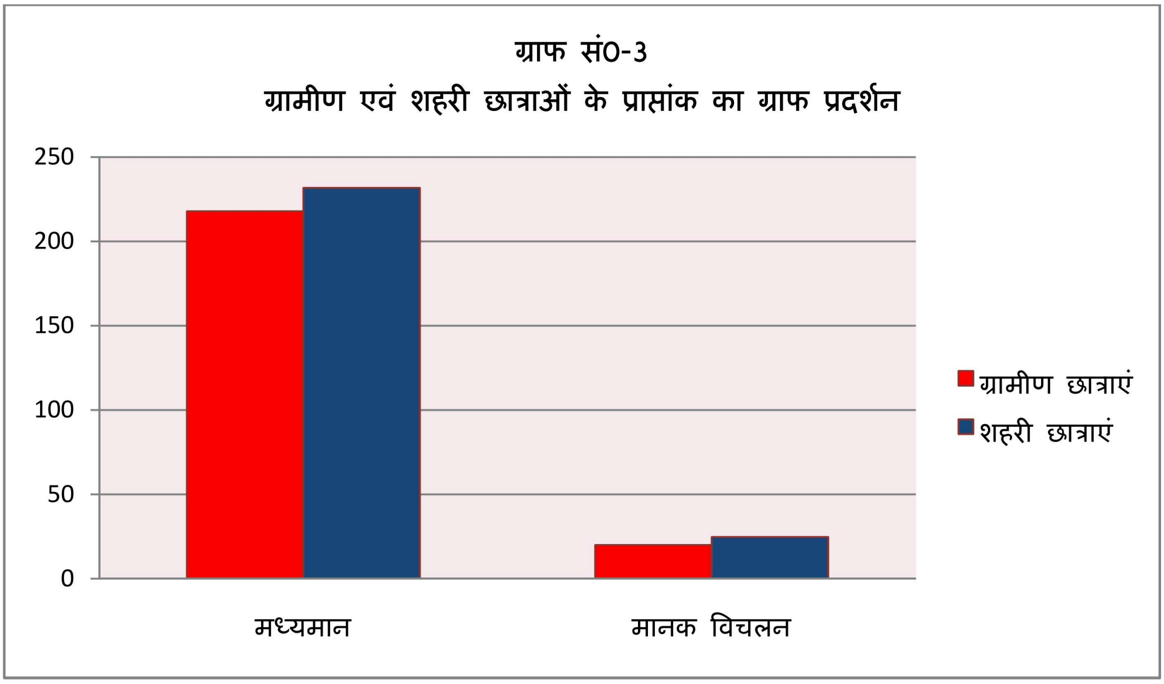
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन समंकों की संक्षिप्त तालिका

तालिका संख्या 4.4.1

विवरण	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	स्वतंत्राश	t-मान	सार्थकता
ग्रामीण छात्राएं	22	217.90	18.59	6.63	42	2.09	0.05 स्तर पर अस्वीकृत
शहरी छात्राएं	22	231.77	28.32				

तालिका क्रमांक 4.4.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण छात्राओं का मध्यमान 217.90 एवं मानक विचलन 18.59 प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार शहरी छात्राओं का मध्यमान 231.77 एवं मानक विचलन 28.32 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों की परिगणित मानक त्रुटि 6.63 है तथा टी–मान 2.09 प्राप्त हुआ है जो 42 स्वतन्त्रांश के 0.05 स्तर पर सारणीमान 2.02 से अधिक है।

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के व्यावसायिक द्वन्द में सार्थक अन्तर है, अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।


ग्राफ सं0-3
ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के प्राप्तांक का ग्राफ प्रदर्शन
250
200
150
100
50
0
मध्यमान
मानक विचलन
ग्रामीण छात्राएं
शहरी छात्राएं

4.5 चतुर्थ शून्य परिकल्पना का परीक्षण :

परिकल्पना क्रमांक– 04

माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के व्यावसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

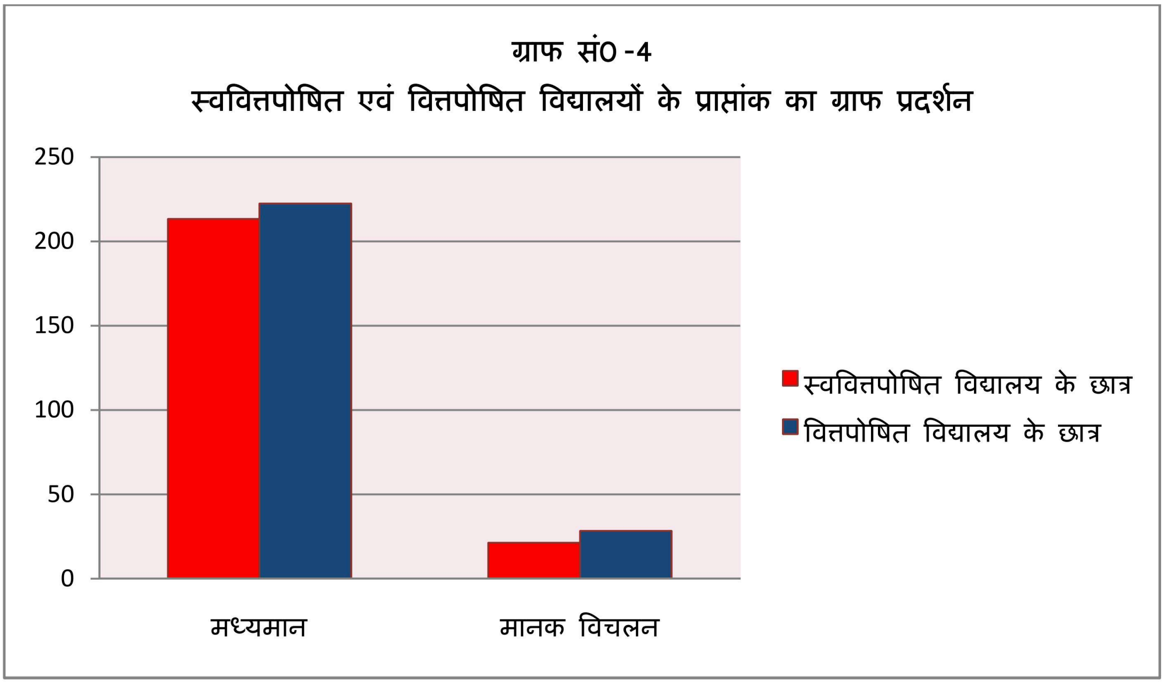
माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन के समंकों की संक्षिप्त तालिका

तालिका संख्या 4.5.1

<table>
<tr><th>विवरण</th><th>संख्या</th><th>मध्यमान</th><th>मानक विचलन</th><th>मानक त्रुटि</th><th>स्वतंत्राश</th><th>t-मान</th><th>सार्थकता</th></tr>
<tr><td>स्ववित्तपोषित विद्यालय के छात्र</td><td>22</td><td>213.27</td><td>21.21</td><td rowspan="2">6.32</td><td rowspan="2">42</td><td rowspan="2">2.73</td><td rowspan="2">0.05 स्तर पर अस्वीकृत</td></tr>
<tr><td>वित्तपोषित विद्यालय के छात्र</td><td>22</td><td>222.36</td><td>20.71</td></tr>
</table>

तालिका क्रमांक 4.5.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि मा0 स्तर पर स्ववित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों का मध्यमान 213.27 एवं मानक विचलन 21.21 प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों का मध्यमान 222.36 एवं मानक विचलन 20.71 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों की परिगणित मानक त्रुटि 6.32 है तथा टी–मान 2.73 प्राप्त हुआ है जो 42 स्वतन्त्रांश के .05 स्तर पर सारणीमान 2.02 से अधिक है।

माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के व्यावसायिक द्वन्द में सार्थक अन्तर है, अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।


ग्राफ सं0 -4
स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित विद्यालयों के प्राप्तांक का ग्राफ प्रदर्शन
250
200
150
100
50
0
मध्यमान
मानक विचलन
स्ववित्तपोषित विद्यालय के छात्र
वित्तपोषित विद्यालय के छात्र

4.6 पंचम शून्य परिकल्पना का परीक्षण :

परिकल्पना क्रमांक– 05

माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यावसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

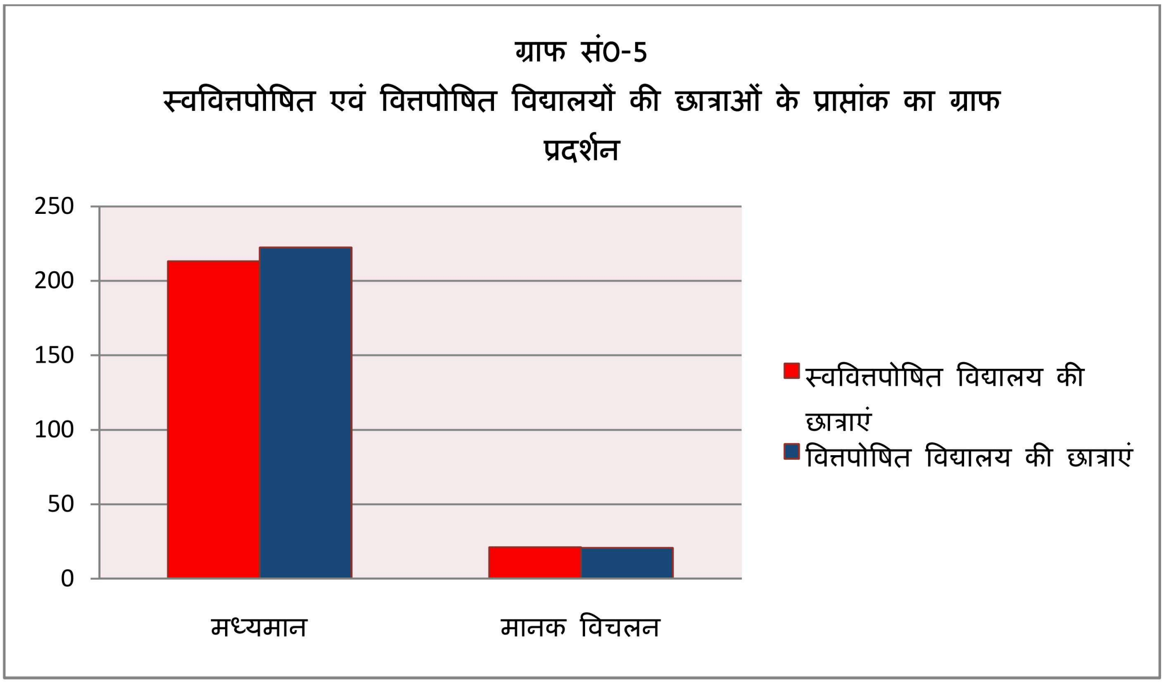
माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन के समंकों की संक्षिप्त तालिका

तालिका संख्या 4.6.1

विवरण	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	स्वतंत्राश	t-मान	सार्थकता
स्ववित्तपोषित विद्यालय की छात्राएं	22	225	31.93	8.04	42	0.84	0.05 स्तर पर स्वीकृत
वित्तपोषित विद्यालय की छात्राएं	22	218.18	20.13				

तालिका क्रमांक 4.6.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं का मध्यमान 225 एवं मानक विचलन 31.93 है। इसी प्रकार वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययन कर छात्राओं का मध्यमान 218.18 एवं मानक विचवलन 20.13 है। दोनों समूहों की परिगणित मानक त्रुटि 8.04 है तथा टी–मान 0.84 प्राप्त हुआ है जो 42 स्वतन्त्रांश के .05 स्तर पर सारणीमान 2.02 से कम है।

माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यावसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।


ग्राफ सं0-5
स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित विद्यालयों की छात्राओं के प्राप्तांक का ग्राफ प्रदर्शन
250
200
150
100
50
0
मध्यमान
मानक विचलन
स्ववित्तपोषित विद्यालय की छात्राएं
वित्तपोषित विद्यालय की छात्राएं

पंचम अध्याय

परिणाम, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 परिणाम

5.2 शैक्षिक निहितार्थ-निष्कर्ष

5.3 भावी शोध हेतु सुझाव

परिणाम, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 अध्ययन के परिणाम एवं व्याख्या :

1. उद्देश्य– माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन।

   निष्कर्ष– माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द का कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

   व्याख्या– छात्र एवं छात्रायें दोनों की समान आयु वर्ग की है तथा वर्तमान समय में समान परिवेश में ही शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। एक दूसरे से जानकारी ग्रहण कर रहे हैं। उच्च व्यावसायिक द्वन्द पाया गया है।

2. उद्देश्य– माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एव शहरी छात्रों में व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन करना।

   निष्कर्ष– माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण व शहरी छात्रों में व्यावसायिक द्वन्द का कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

   व्याख्या– ग्रामीण एवं शहरी छात्र दोनों ही समान आयु वर्ग के हैं। दोनों ही एक दूसरे से जानकारी ग्रहण कर रहे हैं। अतः उच्च व्यावसायिक द्वन्द पाया गया है।

3. उद्देश्य– माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण व शहरी छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष– माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण व शहरी छात्राओ में व्यावसायिक द्वन्द में अन्तर पाया गया है।

व्याख्या– ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं दोनों ही समान आयु वर्ग की हैं। दोनों में फिर भी अन्तर पाया गया है। ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा शहरी छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द अधिक पाया गया है। अतः अत्यधिक उच्च व्यावसायिक द्वन्द पाया गय है।

4. **उद्‌देश्य– माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों में व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन करना।**

निष्कर्ष– माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों में व्यावसायिक द्वन्द में सार्थक अन्तर पाया गया है।

व्याख्या– स्ववित्तपोषित व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों में दोनों में अन्तर पाया गया है। स्ववित्तपोषित विद्यालय के छात्रों की तुलना में वित्तपोषित विद्यालय के छात्रों में व्यावसायिक द्वन्द अधिक पाया गया। अतः अत्याधिक उच्च व्यावसायिक द्वन्द पाया गया है।

5. **उद्‌देश्य– माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन करना।**

निष्कर्ष– माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

व्याख्या— स्ववित्तपोषित व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं में अन्तर नहीं पाया गया है। स्ववित्तपोषित व वित्तपोषित विद्यालय की छात्रायें एक दूसरे से जानकारी ग्रहण कर रही हैं। अतः औसत व्यावसायिक द्वन्द से ऊपर पाया गया है।

5.2 शैक्षिक निहितार्थ— निष्कर्ष :

परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के व्यवसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं है जबकि शहरी व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा व्यवसायिक द्वन्द कम है। इसका कारण यह है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राएं दोनों ही व्यवसाय के प्रति जागरूक है तथा वर्तमान में व्यवसाय के महत्व को समझ रहे हैं व व्यवसाय सम्बन्धी विभिन्न जानकारियां प्राप्त कर रहे हैं परन्तु छात्रों की अपेक्षा छात्राओं को आज भी व्यवसाय सम्बन्धी सुलभता ना मिल पाने के कारण उनमें द्वन्द की स्थिति अधिक है।

परिणाम के आधार पर पाया गया है कि ग्रामीण व शहरी तथा स्ववित्तपोषित व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के व्यवसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं है जबकि माध्यमिक स्तर पर क्रमशः ग्रामीण एवं वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं में व्यवसायिक द्वन्द माध्यमिक स्तर पर क्रमशः शहरी व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की अपेक्षा अधिक है। इसका कारण यह है कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी छात्रों

को व्यवसाय सम्बन्धी हर सम्भव सुविधा प्रदान की जा रही है जबकि ग्रामीण व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं को व्यवसाय सम्बन्धी सुविधा व सुलभता व अवसरों तथा सूचनाओं का शहरी छात्राओं की अपेक्षा अभाव रहता है।

वर्तमान में छात्र एवं छात्राएं दोनों में व्यवसाय को लेकर द्वन्द में अन्तर नहीं है। दोनों ही व्यवसाय हेतु उन्नत हैं। बेरोजगारी की समस्याओं को देखते हुये छात्र एवं छात्राओं दोनों को ही व्यवसाय हेतु परिवार व माता–पिता का सहयोग प्राप्त हो रहा है। साथ ही विद्यालय व मीडिया तथा सरकार व विभिन्न संगठनों द्वारा एक समान रोजगार, व्यवसाय शिक्षण में प्रवेश आदि में समानता उपलब्ध करायी जा रही है। छात्र–छात्राओं को समान अवसर व मार्गदर्शन भी प्रदान किया जा रहा है।

5.3 भावी शोध हेतु सुझाव :

किसी भी अनुसंधान अथवा शोध कार्य की सार्थकता एवं उपयोगिता सफल तब सिद्ध होती है जब अनुसंधान उस क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन प्रस्तुत करते हुये उस क्षेत्र को गतिशील बनाये एवं उसमें विकासात्मक प्रक्रिया का संचार प्रदान करते हुये मानव जीवन स्तर को उन्नत बनाये। इसके साथ ही भावी अनुसंधान के मार्ग को प्रशस्त करते हुये उसके लिये कुछ सुझाव प्रस्तुत करें। शोधार्थी द्वारा भावी अनुसंधान हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये जो इस प्रकार से हैं–

1. प्रस्तुत लघु शोध जालौन जिले के अन्तर्गत किया गया है। इस शोध कार्य को विस्तृत क्षेत्र में किया जा सकता है।
2. यह अध्ययन केवल 88 छात्र–छात्राओं पर किया गया है। अतः बड़े न्यादर्श पर अध्ययन किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत लघु शोध माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं तक सीमित है, भावी शोध स्नातक स्तर के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।
4. प्रस्तुत लघु शोध में माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन किया है। भावी शोध में व्यावसायिक द्वन्द के कारणों का अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

माथुर, एस0एस0 (2017); शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर

सिंह, अरूण कुमार (2017); मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास

सरीन एवं सरीन (2007); शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ, आगरा–2, विनोद पुस्तक मन्दिर

शर्मा, आर0ए0 (2011); शिक्षा अनुसंधान, मेरठ, आर0लाल बुक डिपो

लाल, रमन बिहारी (2018); शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, मेरठ, रस्तोगी पब्लिकेशन्स

गुप्ता, एस0पी0 (2011); अनुसंधान संदर्शिका, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन

सिंह, रामपाल एवं डा0 ओ0पी0 शर्मा (2014); शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स

गुप्ता, एस0पी0 एवं अलका गुप्ता (2008); व्यवहारिक विज्ञानों में सांख्यिकी विधियाँ, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन

सोलंकी, एस0के0 (2012); अनुसंधान विधियाँ, इन्द्रपुरी कालौनी, आगरा, माधव प्रकाशन

कपिल, एच0के0 (2012); अनुसंधान विधियाँ, आगरा, एच0पी0 भार्गव बुक हाउस

त्रिपाठी, लाल वचन (2002); मनोवैज्ञानिक अनुसंधान पद्धतियाँ, आगरा, एच0पी0 भार्गव बुक हाउस

पाण्डेय, के0पी0 (2008); शैक्षिक अनुसंधान, वाराणसी, वि0वि0 प्रकाशन

मुहम्मद, सुलेमान (2006); मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, पटना, जनरल बुक एजेन्सी

राय, पारसनाथ (2007); अनुसंधान परिचय, आगरा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल

गोविन, एनन मोरान (2005); तकनीकी शिक्षा के अध्यापक और विकल्पात्मक आधार कैरियर में सन्तुष्टि, प्रतिबद्धता और शिक्षण स्थिति'' पी–एच0डी0 जोर्जिया विश्वविद्यालय, 2005

झीलमराम राजमैथी, मजुमदार (2010); ''भारत में पीढ़ीगत शैक्षिक एवं व्यावसायिक गतिशीलता : सामाजिक एवं धार्मिक आयाम'' पी–एच0डी0 2010 अर्थशास्त्र विभाग, वर्तमान विश्वविद्यालय, कोटा

ए0एन0 जी0, एल्युटु (2011); शिक्षा विभाग, वेसन विश्वविद्यालय, नाईजीरिया, यूरोपियन जनरल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज 3(1)

नई शिक्षा नीति 2020; मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार

Buch, MB. (1988-92); Fifth Survey of Research in Education" (1988-92), Vol. 2, Page No. 1338

Goswami, Sarita (2021); International Journal of Applied Research 2021, Volume 7(2) : 13-17 Page.

Shinde, Tukaram Narayan (2016); International Multidisciplinary Research Journal, Volume 6, Issue 4 Octo 2016.

Gahlot, Shilpa (2019); "A Critical Study of Teachers Sense of Responsibility and Mental Conflict in Context to Indian Society with reference to Socio Economic status" (Research in Maharaja Ganga Singh University Vikaner) Available online at https://ndlhandle.net/10603/309502.

Sarla (2019); Jhujhunu Kshetra ke B.Ed. Vidharthiyo ki Abhiprayna or Saibar Sansadhano ke pryog ke prati abivarti ka adhyayan (Research in Shri Jagdis Prasad Jhabarmal Tibarewala University Rajashthan) Available at http:/ndl.handle.net/10603/245883.

Kumar Jha, Dilip (2019); Remarking An Analisation Research Journals (Vol. 3 Issue 12 March 2019)

Kumar, Panda, Bharat (2021); International Journal of Creative Research Thought (IJCRT) Volume 9, Issue 9 September 2021.

Valphang, Meyhar and Other (2008); Ph.d. Education 2008 Journal of Mangerial Psychology, Volume 23 Issue 3, pp 292-323.

Websites :

- http://www.shodhganga.inflibnet.ac.in
- http://www.shodgangotri.co.in
- http:// hi.m.wikipedia.org
- http://pdfs.sematicscholar.org
- http://www.scotbuzz.org
- http://hdl.handle.net
- http://www.researchgate.net
- https://www.guides.library.bloomu.edu
- http://en.m.wikipedia.org
- http://dictionary.cambridge.org
- www.google.co.in

- www.ugc.ac.in
- https://scholar.google.icom.
- http://egyankosh.ac.in
- vc.bridgew.edu
- www./journalijar.com
- www.thenindu.com
- https://timesofindia.indiatimes.com
- m.jagran.com
- hindi.drishtias.com
- www.bhaskar.com

परिशिष्ट

- प्रदत्त तालिका
- उपकरण

परिशिष्ट–1

छात्र एवं छात्राओ का प्राप्ताक

क्र0सं0	छात्र (44)	क्र0सं0	छात्रायें (44)
1.	229	1.	262
2.	221	2.	236
3.	284	3.	224
4.	215	4.	212
5.	244	5.	210
6.	214	6.	205
7.	231	7.	192
8.	214	8.	236
9.	209	9.	208
10.	207	10.	235
11.	250	11.	213
12.	201	12.	189
13.	250	13.	237
14.	211	14.	217
15.	222	15.	187
16.	224	16.	250
17.	200	17.	208
18.	205	18.	203
19.	239	19.	216
20.	201	20.	219
21.	207	21.	210
22.	236	22.	225

क्रं0सं0	छात्र (44)	क्रं0सं0	छात्रायें (44)
23.	228	23.	204
24.	205	24.	223
25.	222	25.	204
26.	220	26.	231
27.	170	27.	278
28.	170	28.	256
29.	200	29.	218
30.	186	30.	276
31.	198	31.	234
32.	213	32.	178
33.	227	33.	210
34.	205	34.	220
35.	181	35.	233
36.	231	36.	214
37.	261	37.	240
38.	235	38.	268
39.	211	39.	226
40.	219	40.	219
41.	215	41.	179
42.	201	42.	257
43.	209	43.	260
44.	223	44.	271

परिशिष्ट–2
ग्रामीण एवं शहरी छात्रों का प्राप्तांक

क्र0सं0	ग्रामीण स्तर के छात्र	क्र0सं0	शहरी स्तर के छात्र
1.	229	1.	228
2.	221	2.	205
3.	284	3.	222
4.	215	4.	170
5.	244	5.	170
6.	214	6.	200
7.	231	7.	186
8.	214	8.	198
9.	209	9.	213
10.	227	10.	227
11.	250	11.	205
12.	201	12.	281
13.	250	13.	231
14.	211	14.	261
15.	222	15.	235
16.	224	16.	211
17.	200	17.	219
18.	205	18.	215
19.	239	19.	201
20.	201	20.	209
21.	207	21.	223
22.	236	22.	220

परिशिष्ट–3

ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के प्राप्तांक

क्र0सं0	ग्रामीण स्तर की छात्रायें	क्र0सं0	शहरी स्तर की छात्रायें
1.	262	1.	278
2.	236	2.	256
3.	224	3.	218
4.	212	4.	276
5.	210	5.	234
6.	205	6.	178
7.	192	7.	210
8.	236	8.	220
9.	208	9.	233
10.	235	10.	214
11.	213	11.	240
12.	189	12.	268
13.	237	13.	226
14.	217	14.	219
15.	187	15.	179
16.	250	16.	257
17.	208	17.	260
18.	203	18.	271
19.	216	19.	204
20.	219	20.	223
21.	210	21.	204
22.	225	22.	231

परिशिष्ट–4

स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित विद्यालयों के छात्रों का प्राप्तांक

क्र0सं0	स्ववित्तपोषित विद्यालयों के छात्र	क्र0सं0	वित्तपोषित विद्यालयों के छात्र
1.	227	1.	229
2.	250	2.	221
3.	201	3.	284
4.	250	4.	215
5.	211	5.	244
6.	222	6.	214
7.	224	7.	231
8.	220	8.	214
9.	205	9.	209
10.	239	10.	213
11.	201	11.	227
12.	207	12.	205
13.	236	13.	181
14.	228	14.	231
15.	205	15.	261
16.	222	16.	235
17.	220	17.	211
18.	170	18.	219
19.	170	19.	215
20.	200	20.	201
21.	186	21.	209
22.	198	22.	223

परिशिष्ट–5

स्ववित्तपोषित/वित्तपोषित विद्यालयों की छात्रायें का प्राप्तांक

क्र0सं0	स्ववित्तपोषित विद्यालयों की छात्रायें	क्र0सं0	वित्तपोषित विद्यालय की छात्रायें
1.	204	1.	224
2.	260	2.	212
3.	240	3.	210
4.	236	4.	205
5.	218	5.	208
6.	220	6.	213
7.	216	7.	189
8.	235	8.	237
9.	256	9.	217
10.	179	10.	250
11.	256	11.	208
12.	192	12.	203
13.	187	13.	219
14.	178	14.	210
15.	226	15.	225
16.	271	16.	204
17.	223	17.	231
18.	219	18.	276
19.	179	19.	234
20.	257	20.	178
21.	262	21.	233
22.	236	22.	214

परिशिष्ट (स)   शोधार्थी का जीवनवृत्त

AYUSH GUPTA

Gmail : ayushorai9@gmail.com

Address: Muskara Hamirpur (U.P

Mobile: 9648610440

OBJECTIVE

To Pursue An Academic Career Where I Can Utilize My Teaching Skills And Research Expertise To Contribute To Quality Education, Innovative Research, And Institutional Development. Committed To Continuous Learning, Scholarly Writing, And Creating A Positive And Engaging Learning Environment For Students.

PROFESIONAL EXPERIENCE:-

- Six months of teaching experience with examination and administrative duties at **Bundelkhand University, Jhansi**, including invigilation.
- Experience in invigilation and supervisory roles for various **government examinations**.
- Worked as **Invigilator / Lab Supervisor** for **SSC CHSL Tier-I** *(12–30 Nov)* and **SSC SI/CPO** *(09–12 Dec)* at *Adarsh Pariksha Kendra, Sector-80, Noida*.
- Served as **Registration Desk Manager** for **SSC Delhi Police Exam** *(16 Dec – 12 Jan 2026)* at *Adarsh Pariksha Kendra, Sector-80, Noida*.

EXTRA CURRICULAR:

- **O LEVEL.**
- **CTET QUALIFIED.**
- **DIPLOMA IN GUIDANCE AND COUNSELLING (IGNOU).**

SKILLS:

- Chat GPT & AI in Microsoft Office.
- Microsoft Office.

RESERCH PAPERS:

- **A Comparative Study of Learning Styles of Undergraduate Students of Science and Arts Faculties**, International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT), Vol. 13(9) 2025.

- **A Comparative Study of Indian Knowledge System in National Education Policy 2020,** International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT), Vol. 14, Issue 2(2026)

z

S.No.	QUALIFICATIONS	UNIVERSITY / BOARD	PASSING YEAR	PERCENTAGE
1	HIGH SCHOOL	UP BOARD	2014	72.33%
2	INTERMEDIATE	UP BOARD	2016	74.20%
3	B.El.Ed	BU JHANSI UP	2020	79.77%
4	M.Ed	BU JHANSI UP	2022	79.25%
5	M.A.(English)	UPRTOU ALLAHABAD	2024	69.50%
6	Ph.D EDUCATION	BU JHANSI UP	PURSUING	-

STRENGTH:

- Combination Of Hardwork, Smart Work And Sharp Work.
- Experienced In Examination, Evaluation, And Administrative Duties.
- Effective Communication And Interpersonal Skills With Team Spirit.
- Flexible To The Condition.
- Methodical Approach.

PERSONAL PROFILE:-

- Name : Ayush Gupta
- Father’s name : Mr. Yogesh Chandra Gupta
- Mother’s name. : Smt. Santoshi Gupta
- Gender : Male
- DOB : 04 Mar 2000
- Nationality : Indian

- Marital Status : Unmarried
- Languages known : Hindi, English
- Hobbies : Reading & Writing, Research Activities & Attending Seminars.
- Address : Hamirpur Up

DECLARATION

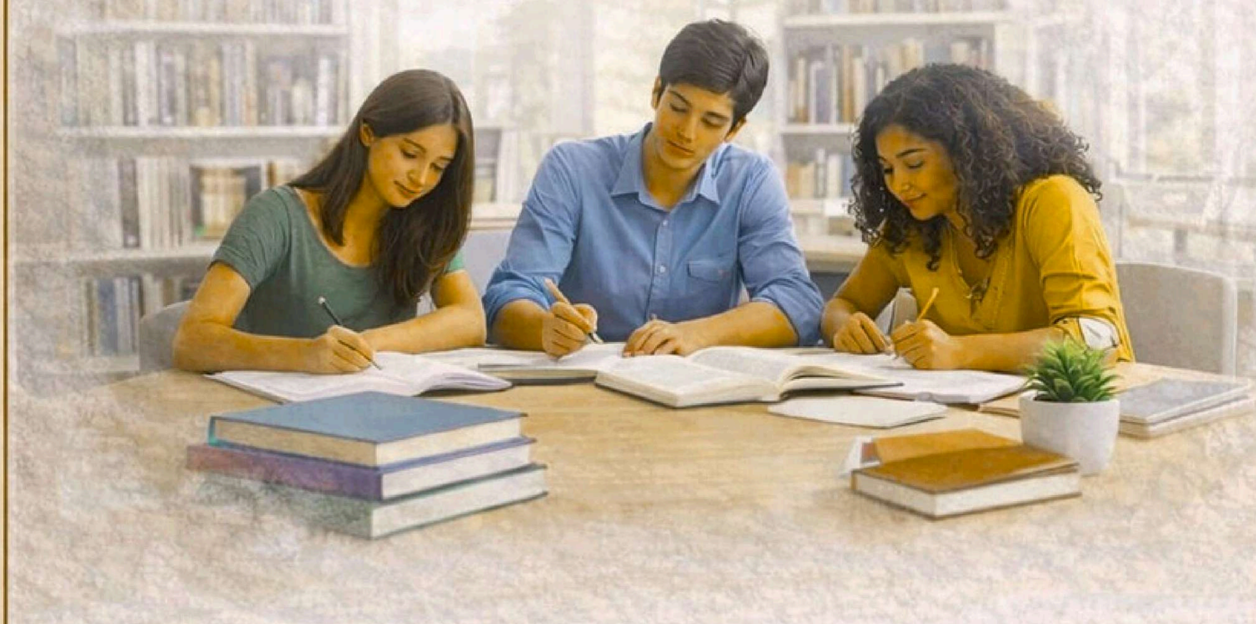
I hereby declare that the information provided above is true and correct to the best of my knowledge and belief. I take full responsibility for the accuracy of the particulars mentioned herein.

Date : 08 march 2026

Place: Muskara Hamirpur (Ayush Gupta)

पुस्तक परिचय

यह पुस्तक माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द (Vocational Conflict) के तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। इसमें विद्यार्थियों के करियर चयन के दौरान उत्पन्न होने वाले द्वन्द, निर्णय-प्रक्रिया तथा उनसे संबंधित शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक पहलुओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। यह पुस्तक विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं शोधार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।



Scan for more information

ISBN: 978-93-344-2335-8

9 789334 423358

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन मूल्य- 99₹